संजय की कलम से ..

घृणा भी महाबली शत्रु है

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और आलस्य – इन छः विकारों को मनुष्य के लिए षट् रिपु अर्थात् छः शत्रु कहा गया है क्योंकि ये मनुष्य का खजाना लूटने वाले और उसके मन को अशान्त करने वाले हैं। परंतु हम देखते हैं कि घृणा और द्वेष भी किसी तरह से इन विकारों से कम नहीं हैं। छः शत्रुओं में इनकी गणना न करने का यह अर्थ नहीं है कि ये कोई विकार नहीं हैं बल्कि इनकी गणना अलग इसलिए की गई कि ये ऐसे विकार हैं जिनमें काम, क्रोधादि सभी विकार समाये हुए हैं। अतः घृणा रूपी महाबली शत्रु पर पूर्ण विजय प्राप्त करने का भरकस यत्न करना चाहिए क्योंकि घृणा एक ऐसी अग्नि है जिसमें कि मनुष्य का अपना ही रक्त और अपना ही मस्तिष्क ईंधन की तरह जलने लगता है। उसका खून खौलता रहता है, वह डाह एवं रोष के मारे जलता-भुनता रहता है; वह सदा संतप्त रहता है। उसका विवेक नष्ट हो जाता है और उसका शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य भी बिगड़ने लग जाता है।

जो मनुष्य योग का अभ्यास करना चाहता हो, उसे तो तुरंत ही घृणा को अपने मन से निकाल देना चाहिए क्योंकि घृणा सदा उस मनुष्य के चित्र को हमारे मन की आँख के सामने लाती है जिससे हम घृणा करते हों और उस चित्र के मानस पटल पर आते ही हममें द्वेष, क्रोध और दुख की लहरें पैदा होती हैं जबकि योगी का लक्ष्य किसी मनुष्य को घृणा वृत्ति से याद न करके प्रभु की मधुर स्मृति में स्थित होना तथा द्वेष और क्रोध की बजाय प्रभु-प्रीति और शान्त-रस का अनुभव करना होता है।

हम यह कहकर घृणा की उत्पत्ति का औचित्य नहीं ठहरा सकते कि 'अमुक व्यक्ति ने ऐसा किया और उसके परिणामस्वरूप हमारे मन में उसके प्रति घृणा पैदा होना स्वाभाविक था' या 'यदि हममें घृणा न हो तो दूसरों के गलत कार्यों के विरुद्ध आवाज कैसे उठा सकेंगे और घृणा के अभाव में तो हम उनके गलत कार्यों को बर्दाश्त करके झुकते जायेंगे।' घृणा की उपस्थिति तो किसी तरह भी मन में अनुचित है क्योंकि दूसरे की बुराई को बुराई बताते हुए हम अपनी बुराई को उचित नहीं कह सकते।

जैसे दलदल में फँसे व्यक्ति से घृणा न करके उसे बाहर निकालने का यत्न करेंगे, उसी प्रकार किसी में दुर्गुण देखकर उससे घृणा नहीं करनी है बल्कि उसके प्रति सहानुभूति का व्यवहार करके उसे उनसे निकालने की चेष्टा करनी है। ❖

अमृत-सूची

- कौन उबारेगा इस दलदल से (सम्पादकीय) 4
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के..7
- पुरुषोत्तम संगमयुग और........9
- 'पत्र' संपादक के नाम 13
- बदल गई ज़िन्दगी 14
- बाई पास को बाय-बाय 15
- अकेले का बल 16
- व्यर्थ से मुक्ति.................. 18
- जीओ और जीने दो........... 21
- आत्मा है छठी इंद्रिय........... 22
- अध्यात्म की नज़र से हनुमान.23
- हाथ में लॉ नहीं उठाना....... 25
- जीवन हीरे तुल्य बन गया..... 26
- रूहानी नेत्र सर्जन 27
- सचित्र सेवा समाचार......... 28
- ग्लोबल हॉस्पिटल की सेवायें .30
- सचित्र सेवा समाचार......... 32
- आवश्यक सूचना 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	80 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	80/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	750 /-	8,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	750/-	8,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383

कौन उबारेगा इस दलदल से

दुनिया के हर क्षेत्र में अप्रत्याशित ढंग से विकास हो रहा है लेकिन एक क्षेत्र ऐसा है जो दिनों-दिन पतन की ओर अग्रसर है और वह है नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का क्षेत्र। नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के रसातल में जाने से हर व्यवस्था चरमरा रही है।

शास्त्रों में गायन आता है कि एक बार एक राक्षस ने पृथ्वी को पातालगामी कर दिया था जिसे उबारने के लिए भगवान को अवतार लेना पड़ा था। पृथ्वी के पाताल में धंसने का अर्थ वास्तव में यही है कि इस पर रहने वाले हर मानव के जीवन-मूल्य पातालगामी हो गये हैं। यह कहानी आज की अशोभनीय स्थिति की ही यादगार कहानी है।

झूठी पड़ गई कहावत

एक जमाना था जब लोग कहा करते थे, 'बच्चे मन के सच्चे' परंतु आज के दौर में यह कथन झूठा पड़ चुका है। एक समाचार के अनुसार अमेरिका देश की कुल आबादी लगभग 30 करोड़ है जिसमें बच्चों की संख्या लगभग 3.5 करोड़ है। इन 3.5 करोड़ बच्चों में से 35 लाख बच्चे किसी न किसी अपराध के कारण जेलों में बंद हैं। वहाँ होने वाले अधिकतर अपराध बच्चों द्वारा किये जाते हैं।

यह केवल अमेरिका जैसी विकसित देश की काली तस्वीर नहीं है। भारत जैसे विकासशील देशों में भी बच्चों और किशोरों द्वारा नित नये अपराधों को अंजाम दिया जाता है। पिछले दिनों एक समाचार आया था – एक पड़ोसी द्वारा 14 साल के बच्चे को किसी गलती पर थप्पड़ मार दिये जाने पर उस बच्चे ने इसका बदला पड़ोसी के बेटे की हत्या करके ले लिया। उसने पड़ोसी के बच्चे को अपने दोस्त की पार्टी में बुलाया, उस 12 वर्ष के बच्चे को शराब पिलाई और जब उसे नशा चढ़ गया तो उसका सिर पत्थर से टकरा-टकरा कर उसे मार डाला। ऐसे ही दो पेइंग गेस्ट किशोरों ने अपने अच्छे स्नेही मकान मालिक की पैसे के लालच में हत्या कर दी। एक एयर होस्टेस बहन ने इसलिए खुदकुशी कर ली कि उसके पिता ने उसे पार्टी से देर रात लौटने पर डांट दिया था।

सहनशीलता की कमी, धन का लालच, बदले की आग जैसे अवगुणों का शमन न हो पाने पर ये विकराल रूप धारण कर हत्या जैसे कुकर्म करवा देते हैं। किसी भी विकार का शमन आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों द्वारा मन के शांत हो जाने पर हो सकता है पर इन गुणों का पाठ्यपुस्तकों और सामाजिक, पारिवारिक व्यवहारों में नितांत अभाव है इसलिए बुराइयां सिर चढ़कर बोलती हैं।

कीटनाशकों का कहर

नैतिक मूल्यों के पतन का प्रभाव मानव के खान-पान, रहन-सहन – सभी व्यवस्थाओं को विनाश की ओर अग्रसर कर रहा है। सर्वविदित है कि जैसा अन्न, वैसा मन। हाल ही के एक समाचार के अनुसार घिया का रस पीने वाले एक दंपत्ति में से एक ने तो शरीर छोड़ दिया और दूसरे को अस्पताल में भर्ती करना पड़ा। जो घिया, तोरी बीमार को ठीक किया करती थी वे आज बीमार करने वाली और जान लेने वाली बन गई हैं क्योंकि अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लोभ में बेहिसाब कीटनाशकों का प्रयोग जमीन के हर उत्पाद को जहरीला बना रहा है। जब मानव का मन जहरीला बन जाता है तो उस द्वारा किये गये हर कार्य में स्वत: जहर घुल जाता है। पहले व्यापारी लोग चीज़ों में मिलावट किया करते थे पर अब तो उगाने वाला हर चीज में ज़हर घोलकर ही उगा रहा है जिससे बचने का मानव के पास कोई रास्ता ही नहीं है। ऐसा

जहरीला अन्न, फल, सब्जी आदि खाकर मानव जाति कब तक और जी पायेगी, कहना मुश्किल है।

चरित्र की उड़ती धज्जियाँ

इसी तरह स्वतंत्रता जैसे विस्तृत शब्द को केवल राजनैतिक स्वतंत्रता तक सीमित कर दिया है। हम राजनैतिक रूप से स्वतंत्र हैं इस भ्रमजाल में उलझे हम सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूप से परतंत्र हैं। कला और संस्कृति के नाम पर भद्दे से भद्दे कर्म और व्यवहार करने पर आमादा हैं। पत्रकार, कलाकार, साहित्यकार, चित्रकार, कवि, अभिनेता, गायक, वादक सब मिलकर पुरुष की पशु प्रवृत्ति को भड़काने और उसे तृप्त करने का वातावरण बनाने में लग गये हैं। नारी का चित्रण चित्र, गीत, काव्य, मंच, साहित्य आदि पर जहां भी आज हो रहा है, वहां उसे रमणी और कामिनी ही चित्रित किया जाता है। माता, भगिनी और पुत्री के रूप में उसे उभारने वाली रचनायें, कृतियां, अभिव्यक्तियां ढूँढने पर भी कहीं नहीं मिलेंगी। सामंती जमाने में नारी बलात् बंधित की जाती थी और आज यह कार्य चतुराई से संपन्न किया जा रहा है ताकि वह स्वेच्छापूर्वक उसी बंधित अवस्था में खड़ी रहे। इसका परिणाम आबालवृद्ध सबके चरित्र पर आघात कर रहा है।

महिलाओं के प्रति हिंसा

महिलाओं पर बढ़ती हुई घरेलू हिंसा भी एक दुखद विषय है। भले ही इसके निषेध में कानून बन गया है लेकिन एक सर्वे के अनुसार नारियों से संबंधित 75.1 प्रतिशत अपराध रिश्तेदारों, मित्रों, पड़ोसियों अर्थात् परिचितों द्वारा ही किये जाते हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार प्रति साठ मिनट में दो महिलाओं पर बलात्कार होते हैं और प्रत्येक 77 मिनट में एक दहेज हत्या होती है। एक खबर छपी थी, 'बीस साल में एक करोड़ बच्चियों की हत्या।' बेटे के प्रति मोह के चलते प्रतिवर्ष 5 लाख बच्चियों की इस दुनिया में आने से पहले ही हत्या कर दी जाती है।

बाल अपराध

एड्स जैसी भयानक बीमारियों से बचाने के लिए बच्चों को सैक्स एज्यूकेशन दी जा रही है लेकिन इसके परिणाम बहुत ही बुरे आ रहे हैं। अमर उजाला दैनिक समाचार पत्र के 7 मार्च, 2007 में प्रकाशित समाचार के अनुसार उ.प्र. के बागपत जिले में एक आठ साल के बालक ने तीन साल की मासूम बच्ची के साथ दुष्कर्म किया। दुष्परिणाम दर्शा रहे हैं कि बच्चों को कोकशास्त्र की नहीं, योगशास्त्र की शिक्षा दी जानी चाहिए।

पवित्र नातों पर प्रश्नचिन्ह

कलियुग की घोर कलिमा में हर रिश्ता कलंकित हो रहा है। अब जाति-भाई, गोत्र-भाई, गुरु-भाई, ग्राम-भाई का जमाना लद गया है। आज तो मामा-भानजी, चाचा-भतीजी के नाते तथा चचेरे-ममेरे बहन-भाई के नाते भी काम विकार की कालिमा से रंगे पड़े हैं। कुछ दिन पहले की एक घटना है। फेरे चल रहे थे। दुलहन का सगा भाई, अपनी बुआ की नातिन (जिसका वह मामा लगता था) को लेकर फरार हो गया। रंग में भंग पड़ गया। आखिर पंचायत और परिवार ने उन्हें बेदखल कर डाला। ऐसी घटनायें अब नई नहीं है। दुहाई प्यार की दी जाती है। पर सवाल यह है कि प्यार की जिन्हें सचमुच जरूरत है – वृद्धों को, असहायों को – उनसे प्यार क्यों नहीं होता? सत्य तो यही है कि काम कटारी की हिंसा को 'प्यार' नामक सुन्दर आवरण से ढककर खुद को छला जा रहा है।

चमड़ी और दमड़ी का प्रभुत्व

विवाह संबंधों का भी अब चमड़ी और दमड़ी पर ही दारोमदार है, आत्मा का मिलन पुरानी बात हो गई है। पिछले दिनों जेल में सज़ा भुगत रहे माँ और बेटे से मुलाकात हुई। कारण पूछने पर पता चला कि शादी

में 10 लाख नकद देकर एक पिता ने अपनी उच्छृंखल लड़की की शादी इस लड़के से एक माह पहले की थी। चूंकि माँ और पुत्र के विवेक पर 10 लाख की पट्टी आ गई थी इसलिए होने वाली वधू के कर्म और व्यवहार को परखा नहीं। ससुराल में आकर उसने अपनी उच्छृंखलता दिखाई तो पति ने डांट दिया। डांट सहन नहीं हुई तो जहर फांक गई और कानून ने माँ-बेटे को जेल में बंद कर दिया। आज 100 में से 50 शादियाँ तलाक में बदल जाती हैं। जो बंधे रहते हैं, वे भी कई बार जबर्दस्ती ही इज्जत का ढक्कन ढके रखते हैं ताकि अंदर का असन्तोष बाहर प्रकट ना हो।

आधुनिक कंस

राम और भरत की कथा को आँसू बहा-बहाकर सुनने वाले लोग, एक-दो की गर्दन काट रहे हैं। भाई ने अपने भाई के सोये हुए परिवार पर मिट्टी का तेल छिड़ककर आग लगा दी, सोये भाई की गर्दन लील ली, भाई की पत्नी को अगवा कर लिया या भाई की मृत्यु के बाद उसकी विधवा से सब कुछ छीनकर घर से निकाल दिया, सपंत्ति हड़पने के लिए भाई के बच्चों को मरवा दिया – ऐसे समाचार सुन-सुन आत्मा कसमसा उठती है। भाई को छोड़िए, जमीन, जेवर के मालिकाना हक और ऊँची कोठी के सपनों को पूरा करने के लिए पिता को मौत की नींद सुलाने वाले अनेक पुत्र हवालात की कोठरियों में बंद हैं। एक जमाना था जब कंस ने पिता को जेल में डाला था पर आज के पुत्र तो कंस को भी मात दे रहे हैं जो जेल के कष्टों को भोगने की तकलीफ ना देकर उन्हें सीधा ही ऊपर पहुँचा देते हैं। फिर पश्चाताप की अग्नि में भी जलते हैं पर तब तक देर हो चुकी होती है।

क्या-क्या वर्णन करें? अनैतिकता के उफनते सागर में से यह तो बूँद भर वर्णन है। इससे पाप के घड़े के गले तक भर जाने की स्थिति का आकलन तो हो रहा है परंतु सवाल यह है कि इस स्थिति से उबारे कौन?

लेख के प्रारंभ में हमने पृथ्वी के रसातल में ले जाए जाने की एक यादगार कथा का उल्लेख किया था। जैसे परछाई का होना सिद्ध करता है कि वस्तु है, उसी प्रकार यादगार का होना सिद्ध करता है कि कभी तो ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित अवश्य हुई थी। उन्हीं परिस्थितियों ने भगवान को अवतार लेने को बाध्य किया था। आज पुनः वे ही स्थितियाँ निर्मित हैं और इसलिए पुनः ईश्वर पिता अवतरित हो अनैतिकता का मूलोच्छेदन कर रहे हैं।

जन्म-मरण के चक्र में आने वाले अनेक देहधारी धर्मपिताएँ भी इस संसार को बहुत कुछ देकर गये हैं परंतु पाप के घड़े को तोड़कर, संपूर्ण रूप से पुण्यात्माओं की दुनिया रचने की शक्ति केवल परमात्मा शिव में ही है। वही पापकटेश्वर, मुक्तेश्वर, विषहर हैं। वर्तमान समय वे सृष्टि पर अवतरित होकर सहज ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर मानव की सोई शक्तियों को जागृत करने का आह्वान कर रहे हैं। जिन्होंने इस आह्वान को सुन लिया है, वे गुप्त ही गुप्त पुण्यात्मा बनने और उनके कार्य में सहयोग देने के पुरुषार्थ में लगे हुए हैं, उनकी चढ़ती कला जारी है। परंतु जिन तक ईश्वरीय आह्वान पहुँचा नहीं है या जिन्होंने सुनकर भी अनसुना कर दिया है, वे अज्ञान अंधकार में ही फँसे हैं। ऐसी आत्माओं के प्रति हमारी हार्दिक शुभकामना है कि वे आत्म-उन्नति के मार्ग में आने वाली हर बाधा को तोड़कर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की किसी भी शाखा में जाकर जल्द से जल्द, सृष्टि पर अवतरित ईश्वर पिता से अपना जन्मसिद्ध अधिकार ले लें। याद रखें, अभी नहीं तो कभी नहीं।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

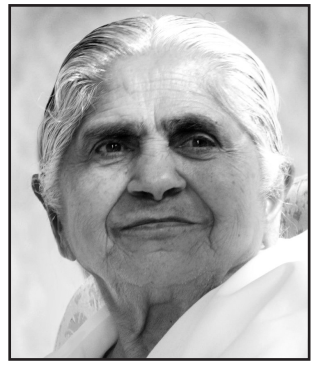

दिव्यबुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... – सम्पादक

प्रश्नः- वर्तमान समय के प्रमाण हमारा माडर्न पुरुषार्थ वा तीव्र पुरुषार्थ क्या होना चाहिए?

उत्तरः- जो जरूरी नहीं है, वह संकल्प भी न आये, संकल्प की क्वालिटी अच्छे से अच्छी हो। बाबा ने कहा, संकल्प और समय संगम के बहुत बड़े खज़ाने हैं। एक सेकंड में भी बहुत कमाई है। हमारा एक सेकंड भी व्यर्थ संकल्प चला तो इसमें बहुत-बहुत नुकसान है। जब व्यर्थ संकल्प चलते हैं, उस घड़ी महसूस नहीं होता है। अगर कोई महसूस करायेगा तो भी कहेगा कि यह मेरी बात नहीं समझता है। तो ऐसा अटेन्शन रखना वर्तमान समय का माडर्न पुरुषार्थ होना चाहिए।

वृत्तियाँ बनती हैं मन में, इसलिए कहते हैं मनोवृत्ति ऐसी है। हमारी मनोवृत्ति शुद्ध, शान्त हो, यह है माडर्न जमाने का पुरुषार्थ। परिस्थिति कैसी भी हो लेकिन हमारी स्व-स्थिति उससे ऊँची हो। अगर स्व-स्थिति ऊँची नहीं है तो परिस्थिति का प्रभाव पड़ जाता है।

कोई की भी बात साइलेन्स में रहकर सुनें, जवाब दें या न दें, समय पर उसे आपेही जवाब मिल जायेगा। हमें बात ऐसे करनी चाहिए जो सामने वाला समझकर कोई बात कहे। जैसे दादी गुलज़ार बाबा के दिन कितना ध्यान रखती है, पूरा समय साइलेन्स में रहती है। ऐसे हम भी साइलेन्स में रहना सीख जायें तो बाबा सब काम आपे ही करा लेगा।

शिवबाबा आया तो ब्रह्मा बाबा को कितनी गालियाँ खानी पड़ीं। बाबा कहता, बच्चे उनका दोष नहीं है, पहचानते ही नहीं हैं। कोई फिर बातों में मिर्च-मसाला डालकर उन्हें खूब चटपटा बना देते हैं लेकिन उन बातों का प्रभाव हमारे ऊपर न पड़े। इतनी साइलेन्स की वा स्नेह की शक्ति हो जो अंदर ही अंदर उन्हें परिवर्तन कर लें।

कोई कल की बात है, कोई मास दो मास पहले वाली बात है, अगर वह भूली नहीं है तो हमारी स्वस्थिति कैसे बनेगी। परिस्थिति आई, मैं थोड़ा परेशान हुई तो स्वमान गंवाया। कोई भी पेपर आया, स्वमान में रहे तो पेपर पार हो गया। हम पास हो गये। अगर पास नहीं हुए तो मार्क्स कम हो जायेंगी। इतना पुरुषार्थ में खबरदार, होशियार, सावधान रहना है। पहले सिक्योरिटी वाले आवाज़ करते थे, खबरदार, होशियार। आज के ज़माने में रड़ी नहीं मारते हैं लेकिन अलर्ट ऐसे रहते हैं जो कोई की भी हिम्मत अंदर आने की न हो।

समर्पण है तन-मन-धन का। मेरा कुछ भी नहीं। अगर आइवेल के लिए कुछ जेबखर्च भी रख दिया है तो समर्पण कैसे हुए? हमारा मन-वचन-कर्म श्रेष्ठ हो, ऑनेस्टी भी बहुत चाहिए। ज़रा भी हेराफेरी न हो। जो बोलें, वह सच बोले। एक बाबा के सिवाय दूसरा कोई याद न आये, ऐसा वफादार होकर रहना है। कोई सामने बैठा हो या हज़ारों माइल दूर बैठा हो, उसको साइलेन्स की शक्ति मिलती रहे। अगर किसी कारण से मैं गिरी, चोट आई तो बाबा कहेगा, इसका योग ठीक नहीं है।

यह गफलत में है। कोई धक्का खाता है, हार्ट में पेन होता है तो ज़रूर दर्द का कोई तो कारण होगा। दिमाग में अगर डिप्रेशन आया तो उसका कारण भी वेस्ट थाट्स हैं। ऐसी कंडीशन मेरी न हो, इसमें बहुत खबरदार होशियार रहना है – यह है माडर्न जमाने का पुरुषार्थ

प्रश्नः- सिमरणी (108 की माला) में आने के लिए ध्यान देने योग्य मुख्य बातें कौन-सी हैं?

उत्तरः- हमें सतयुगी स्वराज्य में आने का अधिकार लेना है तो हमारी पर्सनैलिटी में सौ प्रतिशत प्यूरिटी हो। अगर वह नहीं है तो क्वेश्चन उठता है, पता नहीं कब आयेंगे? आगे आयेंगे या पीछे आयेंगे? हम ही कल्प पहले विजयी माला में आये थे, अभी भी 108 की विजयी माला के दाने हैं और फिर फिर होंगे, यह सदा स्मृति रहे।

सिमरणी में आना है तो सदा सिमरण चलता रहे। सिमरण बुद्धि से करेंगे, मन को कहेंगे शांत कर। मन को दबाते नहीं हैं, उसको प्यार से लोरी देकर सुला देते हैं। बुद्धि से योग भी लगायें, धारणा भी करें फिर सेवा में बुद्धि का अभिमान न हो। देही-अभिमानी स्थिति में रहकर सेवा करनी है। बुद्धि कहती है, तू देही-अभिमानी बन।

सिमरणी में आने के लिए कम से कम 108 बातें ध्यान पर रहनी चाहिएँ। उनमें अगर 8 बातें भी मुख्य सिमरण में आ गईं तो देह-अभिमान खत्म हो जायेगा, नष्टोमोहा स्मृतिस्वरूप बन जायेंगे। ज्ञान का सिमरण ज्ञान देने वाले की याद दिलाता है। ज्ञान देने वाला दाता अगर याद नहीं है तो ज्ञान का तीर लग नहीं सकता।

जो ज्ञान के महत्त्व को समझते हैं, वे अपने पार्ट को भी समझ सकते हैं। ऐसे नहीं, पता नहीं मेरा पार्ट क्या है! कोई-कोई अपनी कमज़ोरी को देख दिलशिकस्त हो जाते हैं लेकिन बाबा कहते, जो अच्छी सीनरीज़ पास हुई हैं, वे सब स्मृति में रहें। सेवा में सेन्स भी हो तो इसेन्स भी हो तब सफलता मिलती है। बाबा सेन्सीबुल उसे कहते, जो त्रिकालदर्शी होकर हर कर्म करते हैं।

ज्ञान चिंतन और सिमरण में बहुत फर्क है। प्रभुचिंतन में जाने से पहले अगर पास्ट का चिंतन या परचिंतन अंदर घुस जाता है तो पुरुषार्थ में हलचल आ जाती है। कोई न कोई व्यर्थ का चिंतन हमारी स्थिति को डगमग कर देता है। हमारे स्व-चिंतन में ईश्वरीय चिंतन रहना चाहिए, उसके बीच में फिर सिमरण ज़रूर हो। भजन मुख से गाते हैं, माला फेरते सिमरण में रहते हैं।

प्रश्नः- तड़पती हुई आत्माओं की आवाज़ क्यों नहीं सुनाई देती? स्पष्ट सुनाई दे, इसके लिए क्या पुरुषार्थ चाहिए?

उत्तरः- 1. इस दुनिया से ऊपर रहेंगे तो उन तड़पती हुई आत्माओं की आवाज सुन सकेंगे। बाबा ने सन्देश में भी कहा कि ऊंची पहाड़ी पर ले गया तो तड़पती हुई आत्माओं की आवाज़ सुनाई दी। जैसे ब्रह्मा बाबा को देखा, यहाँ है ही नहीं, कहाँ है, पता ही नहीं। बाबा का काम है सारी दुनिया को दृष्टि देना, वो केवल हमको ही दृष्टि नहीं देता है, सबको दृष्टि देता है। वो जगतपिता है। एक है परमपिता और दूसरा है जगत पिता, हम भी जगतपिता और परमपिता के बच्चे हैं तो केवल यहाँ ही नहीं देखेंगे, ऐसी स्मृति होगी तो हमें तपड़ती हुई आत्माओं की आवाज़ सुनाई देगी।

2. जिनकी बुद्धि दूरांदेशी है, उनका कारोबार भी अच्छा चलता रहेगा और वो इज़ी भी रहेंगे। सच्चाई और प्रेम से, बेहद में रहने से मनसा सेवा कर सकते हैं। जब तक कहाँ न कहाँ शरीर और सम्बन्ध में भाव-स्वभाव है तो मनसा सेवा नहीं हो सकती। इन आवाज़ों से पार जायें तो उनकी आवाज़ें सुनाई दे सकती हैं। यह काम बाबा को हम से ही कराना है। जब सब बन्धनों से मुक्त, बन्धनमुक्त-जीवनमुक्त बनेंगे तब दुःखियों की आवाज़ सुनाई देगी। सुनने की भावना होगी तो बाबा अपने आप भासना देगा। ❖

पुरुषोत्तम संगमयुग और परमात्मा द्वारा प्रेम से हम बच्चों की पालना

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

एक बार किसी ने पूछा कि ब्रह्माकुमारी संस्था में सबसे अच्छे से अच्छी बात क्या है तो मैंने कहा कि वैसे तो अच्छे से अच्छी बहुत-सी बातें हैं परंतु जहाँ तक मैंने समझा है, परमात्मा के परमपिता के रूप में जो कर्त्तव्य होते हैं, उनका साथी और साक्षी बनकर हमें परमात्मा की जो पालना मिलती है, वही सर्वश्रेष्ठ अनुभूति कराती है। शास्त्रों में जीवंत अनुभूतियाँ नहीं होती परंतु बीती हुई विचारधारायें तथा जीवनकहानियाँ ही होती हैं जिनसे प्रेरणा मिलती है। यहाँ पर परमपिता साकार शरीर के माध्यम से जिस स्नेह से पालना करते हैं, वह अनुपम और अद्‌भुत है।

मुझे ईश्वरीय प्रेम के आधार पर ही इस ज्ञान से जीवनदान मिला है। सन् 1951 में इस संस्था से मेरा परिचय हुआ। साकार ब्रह्मा बाबा के साथ मुलाकातें भी हुईं और मेरे निमंत्रण पर ब्रह्मा बाबा तथा मातेश्वरी जी मुंबई आये तथा साढ़े चार महीना वहाँ रहे। सेवा के कई कार्यक्रमों में उनका सहयोग मिलता रहा। परंतु उस समय ये सब बातें होते हुए भी मैं अपने को शिवबाबा का बच्चा नहीं समझता था और ब्रह्मा बाबा के साथ लौकिक माता के गुरु के रूप में ही संपूर्ण सम्मानपूर्वक व्यवहार करता था।

आखिर वह घड़ी आई जब सन् 1961 में हम परिवार सहित मधुबन में आये और 10-12 दिन रहे। विदाई के समय आदरणीया संतरी दादी ने पूछा कि आप ब्रह्मा बाबा के बारे में क्या मानते हो, मैंने यही कहा कि ब्रह्मा बाबा को अपनी माता के गुरु रूप में ही मानता हूँ। संतरी दादी ने ब्रह्मा बाबा को मेरा यह उत्तर बताया ही होगा परंतु मेरे उत्तर के कारण उनके दिल में मेरे प्रति कोई विरोध भाव उत्पन्न नहीं हुआ। फिर जब हम विदाई लेकर जाने लगे तो ब्रह्मा बाबा बरगद के पेड़ तक आये। विदाई के समय उनकी आँखों में हमारे प्रति प्रेम के मोती भर आये और ब्रह्मा बाबा ने अपनी जेब से रूमाल निकालकर उन्हें पोंछा। प्रेम के इन अश्रुओं ने ही मेरे जीवन में परिवर्तन लाया। रास्ते में मैंने ब्रह्माकुमारी ऊषा जी को यही बताया कि ब्रह्मा बाबा कितने महान हैं। मैंने निकलने से पहले तक भी उनके बारे में यही कहा कि ये मेरी माताजी के गुरु हैं फिर भी उन्होंने हमें नि:स्वार्थ प्यार दिया। उस दिन की प्रात:काल की मुरली का मुख्य सार था मोहजीत बनने का तो मैंने ऊषा जी को कहा कि स्नेह और मोह के बीच के सूक्ष्म भेद की रेखा का ब्रह्मा बाबा को पूरा ही ज्ञान है। उन्होंने ईश्वरीय प्रेम के आधार पर हमें पालना दी तो क्यों नहीं हम उनकी पालना का रिस्पांड करें तथा ईश्वरीय प्रेम की अनुभूति के आधार पर राजयोग का प्रयोग जीवन में करें। मुंबई आकर हम दोनों सुबह 5 से 6 बजे योग की अनुभूति का प्रयोग करने के लिए सेवाकेन्द्र पर गये और जो दस साल में स्वीकार नहीं कर सका, सात दिन में ही मैंने शिवबाबा को पारलौकिक पिता और ब्रह्मा बाबा को अलौकिक पिता के रूप में स्वीकार कर लिया। इस प्रकार से देखा जाये तो उन प्रेम के अश्रुबिंदुओं के आधार पर मेरा तथा ऊषा जी का 84वां जन्म शुरू हुआ।

फिर हम नियमित रूप से सेवाकेन्द्र पर जाने लगे। राखी का त्योहार भी सेवाकेन्द्र पर अच्छी रीति

से मनाया। नवंबर-दिसंबर दो मास के लिए ब्रह्मा बाबा का मुंबई आगमन हुआ। डॉक्टर के कहने पर ब्रह्मा बाबा रोज़ सुबह हैंगिंग गार्डन में पैदल घूमने के लिए जाते थे। हम भी उनके साथ जाते थे। फलस्वरूप हमारा ब्रह्मा बाबा के साथ निकट का संबंध स्थापित हुआ और इस आधार पर जीवन में कई बातों का परिवर्तन होता रहा। घूमते समय ब्रह्मा बाबा प्रेम से कहते थे, बच्चे, जल्दी-जल्दी तैयार हो जाओ, बाबा आपको विदेश की सेवा के लिए भेज सकता है। हमने ब्रह्मा बाबा को कहा कि बाबा हम विदेश सेवा के लायक नहीं हैं, कई पुराने भाई-बहनें जा सकते हैं। तब बाबा यही कहते कि त्रिकालदर्शी बाप कौन है, तुम हो या मैं हूँ? इस प्रकार परमात्म प्रेम के आधार पर पालना होती रही और हम आगे बढ़ते रहे। फिर तो बाबा आबू चले गये। सन् 1963 में एक मुरली में बाबा ने कहा कि अभी तक बाबा के पास कोई भी राइट हैण्ड बच्चा ऐसा नहीं है जो ईश्वरीय सेवा को विहंग मार्ग से आगे बढ़ा सके। तब मैंने बाबा से पत्र-व्यवहार किया। बाबा ने मुझे विहंग मार्ग की सेवा का वरदान दिया और उस समय हमने पहला-पहला गीत बनाया, 'वसुधा के इस आंचल में..।'

ब्रह्मा बाबा ने उस गीत को स्वीकार किया और गुरुवार को भोग के दिन यह गीत बजाया गया तब संदेशी को शिव बाबा ने यही कहा कि बच्चों की बुद्धि पवित्र होने के कारण शिवबाबा के स्वागत का पहला गीत बनाया है क्योंकि किसी के आगमन पर पहला गीत स्वागत का ही होता है। संगमयुग अर्थात् जहाँ बाप बच्चों का स्वागत करते और बच्चे बाप का। फिर बाबा ने पहला-पहला यज्ञ का कारोबार दिया कि बच्चे, 500 बाल्टियाँ खरीदकर आबू भेजो क्योंकि बच्चे जब मधुबन आते हैं तो साथ में बिस्तर और बाल्टी लेकर आना पड़ता है जिस कारण बच्चों को बहुत परेशानी होती है जिसे बाबा दूर करना चाहता है। फिर बाबा ने नेपाली चद्दर और फोम के गद्दे आदि मंगवाये।

सन् 1962 की मकर संक्रांति के दिन मैं मधुबन में था, बाबा ने हमें पूछा, मकर संक्रांति के दिन आप क्या करते हो? हमने कहा कि हम पतंग उड़ाते हैं तो फौरन बाबा ने विश्व रत्न दादा को बाज़ार से पतंग खरीदकर लाने के लिए कहा और जैसे हर माँ-बाप अपने बच्चों की आश बड़े प्रेम से पूर्ण करते, ऐसे ही ब्रह्मा बाबा ने हिस्ट्री हॉल की छत पर हमें ले जाकर हमारे साथ पतंग उड़ाई अर्थात् ब्रह्मा बाबा ने अपनी इतनी ऊँची पोज़ीशन से नीचे उतरकर हम बच्चों की पालना के लिए पतंग उड़ाई। इस प्रकार के प्रभु प्रेम द्वारा पालना के अनेक अनुभव हैं।

सन् 1968 के नवंबर में जब वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रीच्युअल ट्रस्ट के निर्माण के संबंध में मीटिंग हो रही थी तो बड़ी दीदी, दादी प्रकाशमणि जी तथा आनंद किशोर दादा ने मैनेजिंग ट्रस्टी के रूप में मेरे नाम का प्रस्ताव रखा जिसे ब्रह्मा बाबा ने फौरन स्वीकार कर लिया। मैंने कहा, मैं इसके योग्य नहीं हूँ तो ब्रह्मा बाबा आधे घंटे तक मुझे समझाते रहे और मेरे हर तर्क का प्रेम से जवाब देते रहे। फिर ब्रह्मा बाबा ने कहा कि बच्चे, कल्प पहले भी तू मैनेजिंग ट्रस्टी बना था, अब भी तुम्हें ही बनना है और हर कल्प बनेगा, इस ड्रामा की भावी को कोई नहीं बदल सकता। इस बात को मुझे मानना पड़ा और मैं मैनेजिंग ट्रस्टी बन गया।

हमारी मातेश्वरी जी ने 24 जून 1965 को शरीर छोड़ा, तब ब्रह्मा बाबा की मुरली चली कि ब्रह्मा बाबा ही तुम बच्चों की सच्ची माँ और शिवबाबा पारलौकिक पिता हैं। मम्मा के जाने के बाद ब्रह्मा बाबा ने माँ-बाप दोनों के रूप में हमारी पालना की। यह अनुभव आज भी

हमें बहुत काम में आता है। तेइस सितंबर 2010 को ब्रह्माकुमारी ऊषा जी ने शरीर छोड़ा। उसके बाद मेरे सिर पर माँ-बाप दोनों के रूप में सबकी पालना करने की ज़िम्मेवारी आ गई। जब-जब मुझे डबल ज़िम्मेवारी निभाने में मुश्किल आती है तो मैं ब्रह्मा बाबा का उदाहरण सामने रखता हूँ। ऊषा जी के अग्नि संस्कार से पहले बाबा ने यह संदेश भेजा कि बच्चे को बाप की पालना और ईश्वरीय ज्ञान की पालना का शो करना है। बाप बनकर सबको ऐसे दुखमय वातावरण में सुख की पालना देनी है। अगर मेरे सामने ब्रह्मा बाबा के मात-पिता रूप का अनुभव नहीं होता तो मैं शायद इन दोनों स्वरूपों की कंबाइंड अनुभूति और ज़िम्मेवारी का कर्त्तव्य नहीं कर पाता। सबके सहयोग और शुभभावना के आधार पर ही मैं इन दोनों ज़िम्मेवारियों को निभा पा रहा हूँ।

अठारह जनवरी 1969 को ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हो गये। तब मुझे ही पहले-पहले 19 तारीख की सुबह 9 बजे पांडव भवन पहुँचने का अवसर मिला। तीनों दादियाँ मुझे ब्रह्मा बाबा के कमरे में ले गईं और वहाँ मैंने बाबा का पार्थिव शरीर देखा। हम सबने तीन मिनट योग किया और फिर मैंने दादियों को कहा कि आप सबने सारी रात पिताश्री के पार्थिव शरीर की देखभाल की है, अब आगे का काम हम भाइयों का है। तब दादी प्रकाशमणि जी ने मुझसे सवाल पूछा कि आपको अग्नि संस्कार की विधियों का ज्ञान है तब मैंने कहा कि मैं जब 15 साल का था तब मेरे लौकिक पिता ने शरीर छोड़ दिया था, उनका अग्नि संस्कार का सारा कार्य मैंने ही किया था, इसी प्रकार अनेक रिश्तेदारों के अग्नि संस्कार करने के अनुभव मुझे हैं। तब दादियों ने मुझे ब्रह्मा बाबा के पार्थिव शरीर का अन्तिम संस्कार करने की ज़िम्मेवारी सौंपी और मैंने एक लौकिक पुत्र की भाँति अपने प्यारे पिताश्री ब्रह्मा बाबा के अग्नि संस्कार का हृदयविदारक कर्त्तव्य पूरा किया।

अव्यक्त बापदादा ने ऊषा से वायदा किया कि मैं रमेश की सेहत का ध्यान रखूँगा। तब से जब भी हम स्टेज पर बापदादा से मिलते हैं तो हर बार बाबा मेरी सेहत के बारे में पूछते हैं और कहते हैं कि अपनी तबीयत का ध्यान रखना। लोग गिनती भी करते हैं कि कितनी बार बाबा ने तबीयत का ध्यान रखने के लिए कहा जैसे क्रिकेट के स्कोर बोर्ड में रनों की गिनती होती है अर्थात् अब तक इस सीज़न में 8 बार मुझे प्रभु पालना का यह सुन्दर संदेश मिला है कि अपनी तबीयत का ध्यान रखना।

दो मार्च 2011, शिवरात्रि के दिन जब मैं बाबा से मिला तो बाबा ने इशारे से मेरी तबीयत के बारे में पूछा और कहा कि तबीयत संभालना। बाद में कइयों ने पूछा कि बाबा आपको अपनी तबीयत संभालने के बारे में क्यों कहते हैं तब मैंने आदरणीया जानकी दादी से प्रश्न पूछा कि बाबा मेरी तबीयत के बारे में निर्देश क्यों दे रहे हैं। तब जानकी दादी ने अपना विचार बताया कि शायद वर्तमान समय सबसे ज्यादा से ज्यादा प्रभु प्रेम के द्वारा पालना लेने वाले भाइयों में आप हैं। इस बारे में मेरा अपना अनुभव और अनुमान यह है कि अव्यक्त बापदादा कई बातों का ज्ञान अपरोक्ष रूप में देते हैं और अपने व्यवहार से उसे सिखाते हैं। बापदादा को हम बच्चों से सतयुग-त्रेतायुग के 2500 वर्षों का विश्व कारोबार कराना है। वहाँ पर पारिवारिक जीवन कैसा होगा और राजा कैसे अपनी प्रजा की बच्चों की तरह पालना करेंगे। इस सिद्धांत का प्रैक्टिकल स्वरूप बाबा हम बच्चों को इस तरह के प्रश्न पूछकर सिखा रहे हैं कि बच्चे पालना का यह स्वरूप सीख लीजिए कि कैसे आप

बच्चों को विश्व महाराजन और विश्व महारानी के रूप में अपनी प्रजा की प्रेम से पालना करनी है।

ज्ञानी तू आत्मा बनने के कारण शुष्क जीवन नहीं जीना है। हम सबको यहाँ से ही आपसी प्रेम के संस्कार भरने हैं और फिर सतयुग में व्यवहार में आना है। इसके बारे में हमारी मातेश्वरी जी हमेशा ही उदाहरण देती, राम राजा, राम प्रजा, राम साहूकार है, बसे नगरी जिये दाता धर्म का उपकार है। इस प्रकार से हरेक प्रकार की प्रजा को राजा राम समान पालना का अनुभव हो और संपूर्ण सुख मिले। आज के जमाने में सरकारें प्रजा से कानून का पालन डंडों के आधार पर कराती हैं और अगर सरकार से कुछ मदद लेनी हो तो भी भ्रष्टाचार के आधार पर ही कारोबार होता है। वर्तमान समय की सरकार के भ्रष्टाचार के कारोबार के विपरीत परमपिता परमात्मा प्रेम की पालना का उत्तरदायित्व निभा रहे हैं। परमात्मा हमें सिखाते हैं कि मुक्ति और जीवनमुक्ति की साधना के लिए परिवार के त्याग की ज़रूरत नहीं है अपितु कमलपुष्प समान रहते हुए शुद्ध स्नेह और प्रेम की पालना दे सकते हैं। यह पालना देने के लिए परमात्मा हम बच्चों के आगे कितना झुक जाते हैं।

एक बार किसी सेन्टर पर कुछ आपस में खिटपिट थी। ब्रह्मा बाबा ने मुझे वहाँ भेजा यह जानने के लिए कि समस्या क्या है और उसका निवारण कैसे हो सकता है। वापस आकर मैंने ब्रह्मा बाबा को बताया कि वहाँ पर तो लोग सत्याग्रह करने के लिए तैयार हो गये हैं। परिस्थिति विकट हो गई है। तब बाबा ने मुझे कहा कि मैं इतना सर्वशक्तिवान हूँ कि मुझे विश्व परिवर्तन के कार्य में किसी भी बच्चे की ज़रूरत नहीं है, मैं अकेला ही परिवर्तन कर सकता हूँ परंतु मैं आप बच्चों को आगे रखता हूँ, कारण कि मुझे बच्चों का भाग्य बनाना है परंतु बच्चों को अपनी मर्यादाओं का पालन करना चाहिए। मैं कितना झुकता हूँ, हमेशा ही मुरली में कहता हूँ कि बाप बच्चों के बिना कुछ नहीं करता, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे और फिर साथ राज्य में आयेंगे। मैं सर्वशक्तिवान होते भी बच्चों की पालना के लिए कितना झुकता हूँ, इस बात की बच्चों को अनुभूति होनी चाहिए।

इस लेख के द्वारा मैं अपने सभी बहन-भाइयों को भी यह नम्र सूचना देना चाहता हूं कि सर्वशक्तिवान परमात्मा हम बच्चों के आगे कितना झुकते हैं इसका अर्थ यह नहीं है कि यह परमात्मा की कमज़ोरी है बल्कि परमात्मा प्रेम की शक्ति के आधार पर झुककर बच्चों की पालना कर रहे हैं तो हम बच्चों की भी ज़िम्मेवारी है कि हम भी बाप की भूमिका को अच्छी तरह समझें और सत्याग्रह आदि-आदि का कारोबार न करें। अभी तो परमात्मा का परिचय पिता के रूप में हुआ है। इसलिए कभी-कभी हम परमात्मा के प्रेम को परमात्मा की कमज़ोरी समझकर अलबेले बनते हैं तो ईश्वरीय मर्यादाओं का उल्लंघन करते हैं इसलिए सदा यही याद रहे कि जब परमात्मा अपना धर्मराज का चौथा स्वरूप धारण करेंगे तब उनसे जो प्यार मिलता है, उसके बदले में सज़ायें मिलेंगी इसलिए उन सज़ाओं का डर रखकर हम व्यवहार करें और अपने जीवन में सत्यता, पवित्रता आदि दैवी गुण धारण करें। मैं तो हमेशा ही परमात्मा के धर्मराज के रूप को याद कर अपने जीवन में सावधानी धारण करता हूँ ताकि नये कोई विकल्प आदि हमसे ना हों और हम नये हिसाब-किताब न बनावें। याद रहे, जो करेगा सो पायेगा अर्थात् जो प्रभु प्रेम की शक्ति के आधार पर पालना करने में संपूर्ण बनेगा, वही विश्व महाराजन तथा विश्व महारानी बनेगा। ❖

‘पत्र’ संपादक के नाम

मीरा सार्वजनिक वाचनालय, मेड़ता सिटी में ‘ज्ञानामृत’ मासिक पत्रिका का सितंबर 2010 का अंक देखा। मुखपृष्ठ पर श्रीकृष्ण जी का आकर्षक चित्र देखकर मन गद्‌गद हो गया। एक ही बैठक में पूरी पत्रिका को पढ़ने लगा तो लगा कि यह कोई साधारण पत्रिका नहीं है वरन यह तो गागर में सागर है। कविता ‘क्रोध बने अवरोध’, ‘प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के’, ‘दोस्त हो तो ऐसा - खुदा दोस्त जैसा’ आदि-आदि रचनायें पढ़कर लगा कि यह पत्रिका राह भटके विद्यार्थियों का सच्चा मार्गदर्शक एवं आदर्श अभिभावक है। ज्ञानामृत को एक बार कोई पढ़ ले, वह इसका दीवाना हो जाता है। पत्रिका के आलेख व्यक्ति को नकारात्मक सोच के स्थान पर सकारात्मक सोच रखने की प्रेरणा देते हैं जो आज के समय में समूचे व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है। यह पत्रिका संकलन योग्य है। ऐसी सामग्री घर बैठे इतनी कम कीमत में प्राप्त होना प्रभु का अनूठा उपहार ही है। ज्ञानामृत को अमृततुल्य बनाने के लिए तमाम लेखकों व संपादक मण्डल को साधुवाद एवं धन्यवाद!

– सुनील कुमार माथुर, मेड़ता सिटी

सितंबर 2010 अंक में ‘कर्मों की गुह्य गति’ लेख बहुत अच्छा लगा। हमारे द्वारा जाने-अनजाने हुए विकर्मों का हिसाब-किताब चुक्तू करने के तीन तरीके बहुत अच्छी रीति समझाये गए हैं। पहला है, परमात्मा को याद करना। दूसरा है, सहनशीलता और तीसरा है, भोगना। लेख पढ़कर अवश्य ही हम पुरुषार्थ की गति को तीव्र बना सकते हैं। इतनी सरल विधि से समझाने के लिए लेखक भाई का धन्यवाद!

– ब्र.कु. रागिनी, हुबली

ज्ञानामृत के जुलाई 2010 अंक के ‘एकाग्रता की शक्ति’ लेख से मैंने एकाग्रता की शक्ति को जाना। इसे पढ़कर बहुत प्रभावित हुआ हूँ। परमात्मा शिव के ज्ञान ने अनेक आत्माओं को पतित से पावन बनाया है। ‘ज्ञानामृत’ भी परमात्मा की शिक्षाओं से देश-विदेश की आत्माओं को पावन बनाने का कार्य कर रही है।

– बंसीलाल कटारिया, कुरुक्षेत्र

ज्ञानामृत का सितंबर अंक रूहानी जागृति और प्रेरणा से मानस को परिपूर्ण कर गया। मुखपृष्ठ पर मुरलीधर कृष्ण का मोर सहित चित्र उच्चकोटि के चित्रकार द्वारा चित्रित, हृदयग्राही और चित्ताकर्षक है। ‘संजय की कलम से’ स्तंभ श्रीकृष्ण की महानता और पवित्रता का दर्शन कराता है। संपादकीय ‘यंत्रवत् और मानववत्’ विशाल अध्ययन और अनुभूति से परिपूर्ण है, जीवन को उपयोगी संदेश देने वाला है, जीवन की वृत्तियों को ईश्वरीय मत प्रदान करता है। ‘मानव का मालिक मानव स्वयं है’ और ‘स्वयं से बातें कीजिए’ इन उप-शीर्षकों में आपने मानव को समस्त कर्मबंधनों से मुक्त होने की राह बतलाई है व सदैव मुसकराने व अपना भाग्य बनाने का संदेश दिया है। आप ज्ञानामृत द्वारा लाखों लोगों के जीवन को शांति दे रहे हैं।

– ब्र.कु. श्रीधर, कोदरिया

मैं ज्ञानामृत पत्रिका को सन् 1986 से पढ़ रहा हूँ। अब भी ज्ञानामृत पढ़े बिना रहा नहीं जाता। आँखें अभी काम कर रही हैं। मैं सोचता हूँ, पत्रिका में नवीनता न रहे तो पढ़ना छोड़ दूँ लेकिन नित्य नवीनता बढ़ती ही जा रही है। आज जो कुछ पढ़ते हैं, दूसरे माह में उससे बेहतर पढ़ते हैं। बीते समय से अब 33 गुणा नवीनता और मिठास बढ़ते जा रहे हैं। अब प्रतिज्ञा कर ली है कि आजीवन पढ़ता रहूँगा।

– धर्मनाथ प्रसाद, जलालपुरी

बदल गई ज़िन्दगी

• ब्रह्माकुमारी आशा परमार, दिल्ली (शक्ति नगर)

मेरे पति एक पाँच सितारा होटल (ओबेराय होटल, दिल्ली) के जनरल मैनेजर हैं। ज़ाहिर है कि सब तरह का खाना-पीना, ऐशो-आराम की ज़िन्दगी, देर रात तक की पार्टियाँ, डांस और मस्ती, सुबह भी देर से (9-10 बजे) उठना, देह-अभिमान में रहना – इसी जीवन को स्वर्ग मानते थे। आत्मा का ज्ञान तो जैसे कोसों दूर था।

भगवान से अटूट नाता जुड़ा

आज से दो वर्ष पहले ब्रह्माकुमारी बहन ने हमें राखी बांधी और कहा, 'अभी नहीं तो कभी नहीं।' उनकी यह बात मन को लग गई कि ऐसा क्या है जो फिर कभी नहीं। खैर, बात लग गई तो मैं और मेरे पतिदेव दोनों सेन्टर पर जाकर सात दिनों का कोर्स करने लगे। बहुत अच्छा लगा, बाबा के बच्चे बन गये। मुरली सुनने लगे तो और भी अच्छा लगने लगा। हमारा तो जैसे भाग्य ही जग गया, भगवान से अटूट नाता जुड़ा, ज्ञान का तीसरा नेत्र खुल गया।

बागवान मिल गया

मुझे बागवानी का बहुत शौक है। पिछले सात वर्षों से लगातार मुझे अच्छे बाग का पहला इनाम मिल रहा है। जड़ी-बूटियों पर लेक्चर भी देती हूँ, घर में 10-12 मोर भी आते हैं और नाचते हैं। मैं सोचती थी, प्रकृति ही भगवान है। जब मस्त ठंडी हवायें चलती, पेड़-पौधे खुशी से झूमते, चारों ओर फूल खिलते, फल लद जाते, मोर नाचते, हरियाली छा जाती तो लगता कि भगवान खुश हैं। इसके विपरीत जब फूल मुरझाने लगते, पत्ते झड़ने लगते तो लगता था कि भगवान रुष्ट हैं। कोई पौधा सूख जाता तो माली पर क्रोध करती थी कि तुमने पौधे को सुखाया क्यों, समय पर पानी-खाद क्यों नहीं डाले परंतु अब ऐसा नहीं है। राजयोग ने जीवन को नया, सकारात्मक दृष्टिकोण दिया है। मेरे क्रोध न करने से ऐसा नहीं है कि माली लापरवाह हो गया है या बगीचा सूख गया है, नहीं, बगीचा पहले से ज्यादा हरा-भरा है। मुझे एक बागवान मिल गया है जिसने मेरे मन का चमन खिला दिया है। वह बागवान है स्वयं भगवान। वह हमें खुशबूदार फूलों के बगीचे (नई दुनिया) में ले जायेगा लेकिन उससे पहले हमें सारे कांटे (विकार) निकालने हैं याद की यात्रा से।

पढ़-लिखकर भी अंधविश्वास

मैंने कोई ज्यादा भक्ति नहीं की, हाँ, सत्यम् शिवम् सुन्दरम् यह अक्सर याद करती थी क्योंकि एक सहेली ने छोटेपन में कहा था कि शिव को याद करने से सुन्दर वर की प्राप्ति होती है। कभी-कभी सोमवार व्रत भी रख लेती थी। एक पंडित के कहने पर एक वर्ष तक सोमवार के दिन शिव का हज़ार बार नाम जपा। बस, यही कुछ यादें हैं भक्ति मार्ग की। अब ज्ञान में आने पर यह सोचकर शर्म-सी आती है कि शिव को प्रसन्न करने के लिए 20 प्रतिशत दूध और बाकी 80 प्रतिशत पानी चढ़ाती थी। शिव और शंकर के अंतर का पता भी अभी चला है। पढ़-लिखकर भी हम कितने अंधविश्वास में रहते हैं।

गुस्सा दूर हो गया

पवित्र होने से घर का वातावरण सुधरा है। प्रभु की याद में खाना बनाकर भोग लगाती हूँ, बेटा भी ज्ञान में चलने लगा है। अज्ञानता मिटती जा रही है। ध्यान में अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति होती है। बाबा ने हमें क्या से क्या बना दिया! ज़िन्दगी ही बदल गईं, देर रात की पार्टियां खत्म हो गई, क्रोध दूर हो गया, कुसंगी दूर हो गये, अच्छे संगी-साथी मिलते जा रहे हैं। मेरे पति कभी-कभी ड्रिंक वगैरह ले लेते थे, उनको मीट खाने का भी शौक था लेकिन अभी बिल्कुल छूट गया है, इससे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में बहुत फायदा हुआ है। **कार्य की अधिकता से तनाव के कारण मधुमेह असंतुलित रहता था लेकिन जब से राजयोग का अभ्यास करना शुरू किया है, वे बिल्कुल सामान्य हैं, तनाव खत्म हो गया है। रोज़ाना के कार्य व्यवहार में उन्हें अपने स्टाफ पर बात-बात में गुस्सा आता था लेकिन अब गुस्सा खत्म हो गया है। वे पिछली बात को एक क्षण में भूलकर आगे बढ़ जाते हैं। बाबा से उन्होंने बात को फुल स्टाप लगाने की विधि बहुत अच्छे से सीख ली है। स्वास्थ्य की चिंता से भी उन्हें निजात मिली है।**

हम रोटरी क्लब के मेम्बर हैं। पहले हम जाते थे तो डांस देखकर, कव्वालियां और गाने सुनकर, खाना खाकर आ जाते थे पर अब सब बदल गया है। जीवन एक नई दिशा की ओर चल पड़ा है। वेस्ट से बेस्ट की ओर ले जाने वाले खिवैया बाप जो मिल गये हैं। सुबह अमृतवेले बाबा से रूहरिहान करती हूँ। दिन की शुरूआत बाबा की याद और मुरली से होती है। ज़िन्दगी का बाकी सफर बाबा की याद और सेवा में कट जाये, यही तमन्ना है। ❖

बाई पास को बाय-बाय

संजय हरीनारायण सारडा, अकोला

मैं पेशे से सिविल इंजीनियर हूँ। उम्र के 34वें वर्ष में मुझे हृदयाघात हुआ। एंजीयोग्राफी करने पर तीन मुख्य आर्टरीज में 90 से ज्यादा ब्लाकेज पाया गया। मुंबई में बाई पास सर्जरी हुई। सर्जरी के बाद लगा कि मैं बीमारी से मुक्त हो गया हूँ परंतु मुझे एक वर्ष के अंदर ही पुनः तकलीफ और परेशानी होने लगी।

कम उम्र में आये इस आघात तथा ऑपरेशन के बाद भी इलाज न होने से मैं काफी निराश हो चुका था, मानो हर पल यमदूत की आहट सुनाई देने लगी थी। जीवन की अनिश्चित स्थिति का अनुभव करता था। लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ के ग्लोबल हॉस्पिटल व डॉ. सतीश गुप्ता के संयोजन में चल रहे 3D Health Care Programme में सम्मिलित होने के उपरांत तन के इलाज के साथ-साथ मेरे मन का भी इलाज हो गया। अरोबिक एक्सरसाइज़ के साथ संयमित खानपान द्वारा शारीरिक स्वास्थ्य मिला। राजयोग द्वारा स्वयं की पहचान से जीवन का सत्य जाना, इससे तनावमुक्ति हुई। मरने का डर कपूर की तरह उड़ गया।

3D जीवनशैली द्वारा हृदयरोग का अचूक इलाज होता है। मुझे यह बीमारी दादा जी तथा पिताजी द्वारा जैसे विरासत में मिली, वे भी हृदयरोग के शिकार थे। छुईमुई के पौधे जैसे मेरे संवेदनशील तथा भावुक स्वभाव ने तथा नकारात्मक सोच ने हृदयरोग को प्रबल बना दिया था। सभी कमियाँ, शिविर के दौरान, स्पष्ट रूप से आइने की तरह सामने दिखाई दीं। इनके परिवर्तन की कुंजी भी शिविर में ही मिली। इस प्रकार 3D रूपी संजीवनी बूटी को जीवन में उपयोग में लाने से मैं इस बीमारी से मुक्त हो गया हूँ। सी.टी.एंजीयोग्राफी कराने पर इस बात की पुष्टि हो चुकी है। अब मैं पूर्णतः स्वस्थ व सुखमय जीवन बिता रहा हूँ। ❖

अकेले का बल

• ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

आध्यात्मिक ज्ञान सुनने वाले कई बहन-भाइयों के मन में कई बार यह प्रश्न उठने लगता है कि दुनिया इतनी बड़ी है, इसके हर अंग में दुराचार-पापाचार रूपी कोढ़ फैल चुका है, हम एक-दो या कुछ लोग अच्छे बनकर इस पापग्रस्त दुनिया का क्या भला कर पायेंगे?

दूसरा, वे यह भी सोचते हैं कि हमारे परिवार में या गाँव में या क्षेत्र में हम अकेले ही ईश्वरीय ज्ञान की धारणाओं में चलते हैं और बहुमत द्वारा हमारा विरोध होता है, जिसे देख कई बार, हिम्मत टूटने-सी लगती है, क्या करें?

अनुभव कहता है कि समाज में परिवर्तन की बयार लाने वाले समाज सुधारक, समाज उद्धारक, संत, महात्मा, मसीहे हमेशा थोड़े ही होते हैं जैसेकि दवाई की मात्रा। होम्यापैथी की छोटी-सी गोली इतने बड़े शरीर को ठीक कर देती है। कुनीन की गोली छोटी होते भी पूरे शरीर में फैले मलेरिया के कीटाणुओं की फौज को निष्क्रिय कर देती है। इसी कड़ी में अन्य भी बहुत-सी गोलियों, दवाइयों, पेय औषधियों का ज़िक्र किया जा सकता है। समाज सुधारक लोग भी बीमार और बिगड़े समाज के लिए औषधि का काम करते हैं इसलिए उनकी संख्या समाज और विश्व की संख्या के अनुपात में कम ही होती है पर उनका एक-एक संकल्प, बोल, कर्म पाप-वृक्ष की जड़ों पर घातक प्रहार सदृश होता है और आखिरकार यह पाप-वृक्ष धराशायी हो जाता है।

बहुत कम ऐसे समझदार लोग होते हैं जो दवा को अपनी रुचि की चीज़ बना लेते हैं और बिना ना-नुकर किए सहज भाव से पी जाते हैं। कुछ लोग मजबूरी से पीते हैं और कुछ लोग तो रोग की बढ़त को सहन करते हुए भी दवा को टच नहीं करते, ना पीने के लिए बहाना बनाते हैं और झूठ तक भी बोल देते हैं।

आध्यात्मिक ज्ञान रूपी औषधि के प्रति भी लोगों की कुछ इसी प्रकार की प्रतिक्रियाएँ देखने में आती हैं। पहली श्रेणी के लोग इसे उमंग से अपनाकर, पाप कर्मों से विरत होकर स्वयं भी औषधि रूप बन जाते हैं, दूसरी श्रेणी के लोग मजबूरीवश, अन्य सब उपायों से हार खाकर ज्ञान-मार्ग को अपनाते हैं और तीसरी श्रेणी के लोग, सर्व दुखों और दोषों को ढोते हुए भी हर हाल में इससे बचने का प्रयास करते हैं।

अपने को दवा समझिए

अपने घर, गाँव या शहर में अकेले ही ईश्वरीय ज्ञान में चलने पर दिलशिकस्त होने या घबराने की बात ही नहीं है। अपने को दवा का रूप समझकर इस स्वमान में रहिए कि मैं इस समस्याग्रस्त दुनिया के लिए समाधान रूपी दवा हूँ। मेरे साथ सुप्रीम सर्जन परमात्मा हैं, मैं अकेला होते भी मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। चूँकि मैं दवा हूँ इसलिए देर-सवेर इस बीमार दुनिया को स्वीकारना ही पड़ेगा।

हम प्रतिदिन दूध को दही रूप में जमाते हैं। उसके लिए खट्टे का उपयोग करते हैं। खट्टे की दो-चार बूँदों में भी इतनी शक्ति है कि वह कई लीटर दूध को दही में बदल देती है। फिर क्या दो-चार मानव, समाज में बहते विकारों के नाले को रोकने में कामयाब नहीं हो सकते?

एक बार एक गाँव में जब सत्संग कराने गये तो वहाँ के लोगों ने बताया कि यह सारा गाँव एक व्यक्ति का बसाया हुआ है। आज से चार पीढ़ी पहले वह नितांत अकेला इस जंगली क्षेत्र में घास की झोंपड़ी बनाकर रहा। फिर परिवार बढ़ते-बढ़ते पूरा गाँव बस गया। जब एक व्यक्ति गाँव बसा सकता है तो क्या हम अकेले, भगवान को साथी बनाकर, कइयों को रास्ता बताकर नई दुनिया नहीं बसा सकते?

भौतिक नकल हो सकती है तो आध्यात्मिक क्यों नहीं?

एक दूसरी दृष्टि से देखें तो भी, आज की दुनिया में एक का प्रभाव फैलते देर नहीं लगती बशर्तेकि उसमें दम हो। हम आये दिन देखते हैं कि मुंबई में कोई एक व्यक्ति एक विशेष स्टाइल के बाल कटवाता है और थोड़े दिनों में भारत के बड़े शहरों की बात तो छोड़िए, छोटे-से गाँव के, छोटे-से सैलून तक भी वह स्टाइल पहुँच जाता है। एक व्यक्ति विशेष डिजाइन का कुर्ता सिलवाता है और गली-गली की दुकानों में उस प्रकार के कुर्तों की बिक्री चालू हो जाती है। इन सब बातों को फैलने में कितना समय लगा? कौन-सी शक्ति ने इन चीज़ों को लोकप्रिय बनाया? अनुकरण करने की शक्ति, नकल की शक्ति, कॉपी करने की शक्ति ने। तो यदि हम भौतिक बातों का अनुकरण कर सकते हैं तो आध्यात्मिक ज्ञान का क्यों नहीं? किसी एक से प्रारंभ होकर एक लौकिक वस्तु दुनिया में फैल सकती है तो किसी एक से प्रारंभ होकर अलौकिक ज्ञान भी सबके लिए सहज स्वीकार्य हो सकता है, शर्त यही है कि हमारे संकल्प में फौलादी दृढ़ता हो, करने के लिए मर मिटने का भाव हो। ज़रूरत यह है कि परमुखापेक्षी न बनकर हम अंदर सुषुप्त पड़ी शक्तियों को अपना सहयोगी बनाएँ। **जब हम बाहरी जगत में सहयोग खोजते हैं तो यह जगत हमसे दूर भागता है और जब अंतर्मन की शक्तियों को सहयोगी बनाने में लग जाते हैं तो संसार भी सहयोग देने में करीब आने लगता है।**

जानवर भी कर लेते हैं अनुकरण

अनुकरण का संस्कार तो जानवरों में भी होता है, जिन्हें बुद्धिहीन माना जाता है। फिर मानव तो सर्वोत्तम बुद्धि वाला है, उसमें तो यह गुण प्रचुर मात्रा में है। एक बार एक शोध हुई थी। एक टापू पर कुछ बंदर थे। वे खेतों के आलू छिलके समेत खाते थे परंतु एक बंदर ने आलू खाने से पहले धो लिए, उसको देख धोकर खाने की मानो प्रथा ही शुरू हो गई और शेष सभी भी धोकर ही खाने लगे। अगर एक बंदर अपने उदाहरण से साथियों को आलू धोना सिखा सकता है तो एक मानव अपने साथी मनुष्यों को, अपने श्रेष्ठ कर्मों के बल से, आत्मा को धोना अर्थात् ज्ञान-योग से आत्मा को पावन बनाना क्यों नहीं सिखा सकता?

इतिहास देता है गवाही

इतिहास उठाकर देख लीजिए, चाणक्य एक ही तो था, उसने सिकंदर की विशाल सेना के जमते पगों को उखाड़ फेंका था। महात्मा बुद्ध एक ही तो था, उसने नरबलि, पशुबलि तथा हिंसा के विभिन्न रूपों को मिटा डाला था। क्राइस्ट एक ही था, उसने नफरत की आंधियों के बीच प्रेम-दीप को प्रज्वलित कर दिखाया था। दूर क्यों जाए, सत्य और अहिंसा के बल से सुसज्जित महात्मा गांधी भी एक ही था जिसके शक्तिशाली नेतृत्व में भारत की जनता ने विदेशी साम्राज्य की चूलें हिलाकर उसे उखाड़ फेंका।

उतर जाइये प्रजापिता ब्रह्मा की जीवन कहानी में

ब्रह्माकुमारीज़ के संस्थापक दादा लेखराज एक ही तो थे। माता गुरु की आध्यात्मिक क्रान्ति का सूत्रपात करने वाले उन अकेले ने शिवशक्तियों और त्यागी-तपस्वी भाइयों की एक बड़ी फौज खड़ी कर दी। आज ओमशान्ति का नारा पाँचों खण्डों में गूँज रहा है। अगर कभी यह भावना आए कि मैं तो अकेला हूँ तो प्रजापिता ब्रह्मा की जीवन कहानी में उतर जाइये, अकेले होकर भी फौलादी संकल्प से कितनी बड़ी कमाल हो सकती है, इस रहस्य की सारी परतें खुलती जायेंगी। उनकी जीवन कहानी पढ़ते-पढ़ते एक से अनेक बनाने के सूत्र हाथ लगते जायेंगे। फिर आप भी यही गीत गायेंगे, अकेले चले थे कारवाँ बनता गया। ❖

व्यर्थ से मुक्ति

• ब्रह्माकुमार सूर्य, आबू पर्वत

जीवन एक सुन्दर यात्रा है परन्तु व्यर्थ विचार इसे विषैला बना देते हैं। 'कुमार' अपने व्यर्थ से इतना दु:खी हो गया था कि अनियन्त्रित मन को रोने के सिवाय कुछ न सूझा। स्वयं के व्यर्थ के वेग से स्वयं ही दुखी। यह स्थिति अकेले कुमार की नहीं, अनेक मनुष्यों की है। व्यर्थ के कारण अनिद्रा व डिप्रेशन का रोग बढ़ रहा है।

भगवानुवाच याद रखें - जब तुम व्यर्थ से पूरी तरह मुक्त हो जाओगे तब सम्पूर्ण बन जाओगे। हमें व्यर्थ व साधारण दोनों ही प्रकार के संकल्पों से ऊपर उठकर श्रेष्ठ स्वमान व विश्व कल्याणकारी विचारों में रहना है, तब ही इस ईश्वरीय जीवन में रौनक आयेगी अन्यथा ईश्वरीय जीवन व कलियुगी जीवन में कोई भेद नहीं रह जाएगा।

व्यर्थ का बीज कहाँ है?

पाँचों विकारों में से किसी के भी वशीभूत व्यक्ति के व्यर्थ विचार अवश्य चलेंगे। कोई-कोई मनुष्य तो कर्मेन्द्रियों के विभिन्न रसों के कारण व्यर्थ के शिकार हैं। कई भय के कारण व्यर्थ से परेशान हैं जैसेकि असफलता या निन्दा का भय, हार या दुर्व्यवहार का भय। 'चिन्ता' - तीसरा बड़ा कारण है व्यर्थ का। चिन्ता में मोह भी सम्मिलित रहता है। मनुष्य को न केवल अपनी चिन्ता बल्कि उनकी भी चिन्ता सताती है, जिन्हें स्वयं अपनी चिन्ता नहीं है। चिन्ता किसी चिता से कम नहीं। चिता तो दिखाई भी देती है परन्तु चिन्ता तो वह गुप्त अग्नि है जो सुख-शान्ति व खुशी को ही खाक कर देती है।

टी.वी. व इन्टरनेट अप्रत्यक्ष रूप से व्यर्थ को बढ़ावा दे रहे हैं। ये दोनों ही मीठे जहर हैं और आत्मा की शक्ति को खाये जा रहे हैं, अनेक विद्यार्थियों की एकाग्रता की कमी के पीछे ये ही ज़िम्मेदार हैं।

व्यर्थ के तो हज़ारों कारण होते हैं। बुद्धिमान वह है जो अपने व्यर्थ के कारण को पहचानता है। परचिन्तन का रोग चिर परिचित है। यूँ ही बैठे-बैठे सोचते रहने की आदत, बुरे संस्कार व पाप की अति भी व्यर्थ के तूफान में जोर भर रही है।

कैसे रोकें व्यर्थ के तूफान को?

सर्वप्रथम तो हमारे मन में यह दृढ़ इच्छा होनी चाहिए कि मुझे व्यर्थ से मुक्त होना है। मुझे संगमयुग पर स्वयं को श्रेष्ठ खजानों से सम्पन्न करना है। भगवान जबकि स्वयं भाग्य बाँटने आया है तो मुझे स्वयं का भाग्य जन्म-जन्म के लिए महान बना देना है। मन यदि महान लक्ष्य की ओर अग्रसर रहेगा तो उसके विपरीत बातें सभी छूटती जाएँगी।

व्यर्थ में रुचि न हो

भगवानुवाच पर ध्यान दें - जो आत्माएँ साक्षीभाव में रहती हैं, वे एक मास का काम एक घण्टे में कर सकती हैं। साक्षीभाव से निर्संकल्प स्थिति आती है और इसमें मन की शक्ति सर्वोच्च स्तर पर चली जाती है। तो जिन्हें संसार के कल्याण में अहं भूमिका निभानी हो, वे व्यर्थ को विराम दें।

यदि व्यर्थ में रुचि नहीं होगी तो हम यहाँ-वहाँ बैठकर अपना अमूल्य समय नष्ट भी नहीं करेंगे। हम परनिन्दा व परचिन्तन में भी समय नहीं देंगे और अध्यात्म ही हमारा मूल लक्ष्य रहेगा। अपने से बातें करें कि हम क्यों आये हैं बाबा के पास? हमने सांसारिक इच्छाओं का त्याग क्यों किया है? सर्वस्व पाने के लिए, दिव्य ईश्वरीय अनुभूतियों के लिए व परमात्म प्रेम में मग्न होने के लिए किया है, न कि व्यर्थ के लिए। हम प्रभु-मिलन के इस स्वर्णिम अवसर को यों ही तो नहीं बिता सकते। यदि

भगवान को पाकर भी हम खाली ही रह गये तो क्या संसार हम पर हँसेगा नहीं? इस तरह स्वयं से बातें करते हुए स्वयं को अन्तर्मुखी करें।

सरलता व सन्तुष्टता

उपरोक्त दो महान धारणाएँ जीवन में सुख पाने के लिए पर्याप्त हैं। जहाँ **सरलता** है, वहाँ मन तीव्रता से नहीं भागता। सरलता माना सहजता। सहज रहने वाला मनुष्य हर बात को सहज भाव से सुनता है, हर समस्या को सहज भाव से हल करता है। हर कर्म सहज भाव से सम्पन्न कर लेता है। सरलचित्त सहज भाव से ही व्यर्थ मुक्त रहता है। किसी भी समस्या को यदि ज्ञान-युक्त होकर देखा जाए तो वह उतनी बड़ी नहीं होती, जितनी बड़ी लगती है। जो मनुष्य हर बात को तूफान बना दे, वह व्यर्थ संकल्पों के तूफानों से बच नहीं सकता। सच्चा योगी सरलचित्त होता है। आप भी सहज भाव धारण करें।

'सन्तोषम् सर्वदा सुखम्' ऐसा व्यक्ति मस्त रहता है। भोजन क्षुधा-तृप्ति के लिए, धन जीवन यापन के लिए और साधन कार्य को सहज करने के लिए हैं - इससे ज्यादा इनका प्रयोजन नहीं है। स्वयं को सन्तुष्ट आत्मा बनायें, तृप्त रहकर जीवन जीयें, सबकुछ आपके पीछे-पीछे आयेगा। **याद रखें, लोग दौलत में खुशी ढूँढ़ते हैं परन्तु वे नहीं जानते कि खुशी ही बहुत बड़ी दौलत है। जहाँ खुशी है, वहाँ लक्ष्मी सहज ही पीछे-पीछे चली आती है। सन्तुष्ट रहने से अनेक प्रकार के व्यर्थ तो मन को स्पर्श ही नहीं करेंगे। सर्व खजानों से पूर्ण आत्मा जब सन्तुष्टता का प्रकाश विश्व में फैलाती है तो सब की तृष्णाओं की ज्वाला शान्त होने लगती है।** सन्तुष्ट आत्मा ही विश्व कल्याण की सेवा में श्रेष्ठ योगदान देती है। भगवान को पाकर भी यदि सन्तुष्ट न हुए तो सोच लें....!!!

साक्षीभाव, समर्पण भाव व निष्काम भाव

साक्षीपन अर्थात् विश्व के इस विशाल खेल को द्रष्टा की भाँति देखना। इसमें जो पार्ट हमें मिला है उसे भी साक्षी होकर देखना व अच्छे से अच्छा पार्ट बजाना। सहज रूप से साक्षीभाव का अभ्यास इस प्रकार करें -

- नो क्वेश्चन, नो कम्पलेन्ट – न मन में प्रश्नों की दुविधा हो और न किसी के लिए मन में शिकायत।
- इस ड्रामा में हर आत्मा का अपना-अपना पार्ट है, सभी निर्दोष हैं।
- यहाँ जो कुछ हो रहा है, वही सत्य है और वही होना चाहिए।
- इस ड्रामा का हर सीन कल्याणकारी है।
- जो घटना एक बार हो गई वह 5000 वर्ष में दोबारा नहीं होगी, इसलिए बातों को जल्दी-जल्दी खत्म करें व भूलते चलें।

ऐसे अभ्यास से मन की गति धीमी रहेगी।

समर्पणभाव अध्यात्म की सुखकारी साधना है। मेरा जीवन प्रभु-अर्थ, मेरा हर कर्म उसी के लिए। मेरा सर्वस्व तुम्हारा। अपनी चिन्ताएँ भी उसी पर अर्पित कर दें, जिस पर अपना प्रेम अर्पित किया है। अपनी समस्याएँ भी उसी को दे दें, जिसे जीवन दिया है। यह समर्पणता निरन्तर की साधना है। मन के विचारों को उस पर अर्पित करते चलो, मन शनैःशनैः शान्त हो जाएगा। मन से आवाज निकलती रहे - 'सब कुछ तेरा', 'परिवार भी तेरा', 'धन-सम्पदा भी तेरी।' यह समर्पण भाव सबकुछ सहज करायेगा और व्यर्थ लोप होता जाएगा।

निःस्वार्थ भाव कर्म को दिव्यता प्रदान करता है। मनुष्य कर्म करने से पूर्व ही फल की उधेड़बुन में लग जाता है। कहीं-कहीं तो वह फल को कच्चा ही खा लेता है। इससे कर्म थकाने वाले व व्यर्थ को बढ़ाने वाले बन जाते हैं। पुण्य कर्म व श्रेष्ठ कर्म

का फल तो स्वत: ही श्रेष्ठ मिलेगा। हम कामना करके उसके बल को नष्ट न करें। कर्म किया और प्रभु अर्पित कर दिया बल्कि कर्म करें ही इस भावना से कि यह कर्म प्रभु अर्थ है। इससे न पापकर्म होंगे और न साधारण कर्म बन्धन का कारण बनेंगे। नि:स्वार्थ भाव आने से सम्पूर्णता समीप आती है, व्यर्थ समाप्त हो जाता है।

विचार परिवर्तन, स्वदर्शन चक्रधारी व स्वमान

काम-भावना को शुभ-भावना में बदलते चलें। कामजीत कोई भी मनुष्य बिना महान साधना के नहीं हो सकता। क्रोध व बदले की भावना को क्षमा भाव में बदलें। क्रोध अग्नि है जो समर्थ विचारों को भस्मीभूत कर देती है। लोभ को सन्तोष में व मोह को आत्मिक स्नेह में बदलें। लोभ व मोह को छोटी दलदल न समझें । अनेकों को तो इस चक्रव्यूह से निकलना भी नहीं आता। अभिमान को स्वमान में बदलें। मान की इच्छा को त्याग में बदलें। गिराने की भावना को सहयोग में बदलें। ध्यान रहे, आपका दुर्व्यहार, दूसरों के व्यर्थ संकल्पों को बढ़ा न दे, अन्यथा आप निर्बल होते जाएँगे।

यदि सचमुच आप व्यर्थ से मुक्ति चाहते हैं तो ज्ञान के प्रयोग के साथ सहज साधनाएँ भी करें। वह साधना है स्वदर्शन चक्र की अथवा 5 स्वरूपों की- अनादि, आदि, पूज्य, ब्राह्मण और फरिश्ता स्वरूप।

आप ज्यादा न कर सकें तो दस-दस मिनट 3 बार समय निकालें व हर समय 3 बार 5 स्वरूपों का अभ्यास करें। इससे मन आनन्दित हो जाएगा और व्यर्थ का वेग नष्ट होने लगेगा। आप निराश न हों कि आपको अनुभव नहीं होता, अभ्यास करते चलो। अनुभव तो निश्चित है।

इसी स्वदर्शन चक्र के अभ्यास के समय जब ब्राह्मण स्वरूप स्मृति में आये तो धीरे-धीरे स्वयं को स्वमान की स्मृति दिलाओ। यह छोटी-सी साधना यदि 3 मास कर ली जाए तो व्यर्थ की समस्या नहीं रह जाएगी ।

स्वमान का अभ्यास इस तरह करें

मैं इस धरा पर पद्मापद्म भाग्यवान हूँ..मैं एक महानात्मा हूँ..मैं विजयी रत्न हूँ..मैं कल्प-कल्प की विजयी हूँ..अब भी मेरी जीत निश्चित है..मैं विघ्न विनाशक हूँ..बाबा ने मुझे यह वरदान दिया है..मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ..सम्पूर्ण परमात्म-शक्तियाँ मेरे पास हैं..मैं विश्व कल्याणकारी हूँ..मुझे विश्व का कल्याण करना है..मैं पवित्रता का सूर्य हूँ..प्रकृति का मालिक हूँ..मेरी पवित्र तरंगों से प्रकृति पावन व सुखदाई हो जाती है..मैं पूर्वज हूँ, मुझे सबकी पालना करनी है..मैं बाप समान फरिश्ता हूँ..बन्धन मुक्त हूँ..जो संस्कार बाबा के वही मेरे हैं..मैं जहान का नूर हूँ..मुझसे ही यह जग रोशन है..इस तरह प्रत्येक स्वमान को 10-15 सेकण्ड दें, चित्त इन्हें स्वीकार करने लगेगा और मन व्यर्थ से मुक्त हो जाएगा।

आओ, अन्धकारमय कलियुग में श्रेष्ठ संकल्पों का प्रकाश फैलाएँ। काम व पाप की बढ़ती हुई ज्वाला को अपनी पवित्रता के बल से शान्त करें। व्यर्थ विचारों से दुखी आत्माओं को सुख प्रदान करें। अपने मन को शान्त करके विश्व में शक्तिशाली तरंगें फैलाएँ क्योंकि मन जब शान्त होता है, तब ही विश्व की सर्वाधिक सेवा होती है। याद रहे, श्रेष्ठ संकल्पों की शक्ति ही श्रेष्ठ भाग्य का निर्माण करती है। व्यर्थ यदि ज्यादा है तो न तो सेवा ही फलीभूत होती है और न आत्मसन्तुष्टि मिलती है। इसलिए व्यर्थ का विस्तार होने ही न दें। स्वयं को अमृतवेले शक्ति व वरदानों से भरें व बाद में ज्ञानरस से आत्मा को तृप्त करें। ऐसा करने से जीवन व्यर्थ से मुक्त हो जाएगा और हम अनेक मनुष्यात्माओं को सकाश देकर उनका कल्याण कर सकेंगे। ❖

जीओ और जीने दो

• ब्रह्माकुमारी कविता, बावल (ओ.आर.सी.)

कहते हैं कि जब सृष्टि रची गई तो मनुष्य के साथ-साथ पशु-पक्षियों की भी रचना की गई। जब भगवान इन सबको सृष्टि पर भेजने लगे तो पशु-पक्षियों ने भगवान से पूछा, हे प्रभु पिता, आप हमें धरती पर भेज तो रहे हैं पर आपने न तो हमें वाणी दी और न ही हाथ दिए। हम अपना जीवनयापन कैसे करेंगे? तब भगवान ने मुसकराते हुए उत्तर दिया कि भोले-भाले प्राणियो, मैं तुम्हारे साथ इन बुद्धिजीवी मनुष्यों को भी तो भेज रहा हूँ। मैंने इन्हें वाणी के साथ-साथ हाथ भी दिये हैं। ये न केवल अपना जीवन निर्वाह करेंगे बल्कि अपने साथ-साथ तुम्हारी भी पालना करेंगे।

क्या हम उत्तरदायित्व को निभा रहे हैं?

पता नहीं उक्त वार्तालाप कब हुआ था, हुआ था या नहीं पर इतना तो निश्चित है कि हम जबान वाले मनुष्यों के लिए ये पशु-पक्षी छोटे बहन-भाइयों जैसे ही हैं। अतः हमें अपने से पूछना है कि जितने विश्वास के साथ प्रभु पिता ने इन प्राणियों को सृष्टि-मंच के पार्ट में हमारा साथी बनाया, क्या उस विश्वास पर हम खरे उतर रहे हैं? क्या भोले-भाले प्राणियों की पालना और रक्षा के उत्तरदायित्व को निभा रहे हैं?

बेवजह शोषण

ज़रा सोचिए, क्या आज हम मनुष्य लोभ-वृत्ति के वश होकर इन प्राणियों के साथ नाइंसाफी नहीं कर रहे हैं? हम लंबे समय से इन बेजुबान प्राणियों का बेवजह शोषण करते आ रहे हैं। कभी हम बहादुरी दिखाने और मान-शान पाने के लिए इन्हें मौत के घाट उतार देते हैं तो कभी थोड़ा-सा धन मिलने के लालच में इनसे इनका जीने का अधिकार छीन लेते हैं। और तो और, क्षण-भर के जीभ के स्वाद के लिए प्रतिदिन कितनी जीव हत्याएँ की जा रही हैं! आखिर क्या कसूर है इन प्राणियों का? क्या यही कि ये बेजुबान, असहाय हैं?

भयंकर है जीवहत्या रूप महापाप का फल

जिस समय किसी प्राणी की बलि दी जा रही होती है उस समय उसकी आँखों में कितनी याचना और कितना दर्द भरा होता है। लेकिन आज हम इतने पत्थर-दिल हो गए हैं जो उसके दर्द को ज़रा भी महसूस नहीं कर पाते। यदि हमें कोई एक थप्पड़ भी मार देता है तो हम उसे एक के बदले दो मारते हैं, उसे न जाने कितनी गालियाँ भी दे देते हैं। तो फिर जिन मासूम प्राणियों की हम जान लेते हैं उनके मन से हमारे लिए कितनी बद्दुआयें निकलती होंगी! ये बद्दुआयें जन्म-जन्मांतर तक हमारा पीछा नहीं छोड़ती। भगवान तो कहते हैं, किसी के प्रति किये गये बुरे संकल्प का फल भी बहुत बुरा मिलता है तो फिर जीवहत्या जैसे महापाप का फल हमें किस हद तक भोगना पड़ता है, इसकी तो हम कल्पना भी नहीं कर सकते। कई लोग सोचते हैं, पाप तो कसाई करता है, हम तो सिर्फ खाते हैं, तो हमें क्यों पाप लगेगा? लेकिन ज़रा सोचिए, हम खाते हैं तभी तो कसाई उस जीव को मारता है। यदि खाने वाले ही नहीं होंगे तो कसाई किसके लिए मारेगा। कसाई से बड़े पापी तो वे हैं जो उसे यह पाप करने के लिए रास्ता देते हैं।

आदि मानव जैसी क्रूरता आज भी

कहा जाता है कि असभ्य मानव जानवरों को मारकर उनका कच्चा मांस खाते थे क्योंकि उनके पास खाने के लिए और कुछ नहीं था लेकिन आधुनिक समय में बाज़ारों में खाने की इतनी वस्तुयें हैं कि हम

उनकी गिनती नहीं कर सकते। एक से एक फल, सब्जियाँ और कितने ही फास्ट फूड आ गये हैं! तो फिर तनिक से स्वाद के लिए किसी बेजुबान प्राणी को जान देने के लिए मजबूर कर देना, यह कहाँ की इंसानियत है? इसका अर्थ यह है कि इतना विकास कर लेने के बावजूद भी आज हम भीतर से आदि मानव जैसे क्रूर ही हैं। फर्क केवल इतना है कि वह कच्चा मांस जंगलों में बैठकर खाता था और हम उसे पका कर बड़े-बड़े होटलों में या घरों में डायनिंग टेबल पर सजाकर खाते हैं।

भगवान समझा रहे हैं कर्मगति

हम स्वयं के लिए तो चाहते हैं कि परमात्मा सदैव हमारी रक्षा करें और दूसरी ओर उन्हीं की रचना को हम अपने हाथों से नष्ट किये जा रहे हैं तो फिर भला भगवान हम से कैसे खुश रहेंगे और क्यों हमारी रक्षा करेंगे? वर्तमान समय प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से परमपिता परमात्मा शिव, ब्रह्मा तन में अवतरित होकर सभी मनुष्यात्माओं को कर्मों की गुह्य गति समझा रहे हैं। शिवबाबा कहते हैं, हे आत्माओ, तुम्हारे द्वारा किया गया एक श्रेष्ठ और सुखदायी कर्म जहाँ तुम्हें स्वर्ग का मालिक बना सकता है, वहीं तुम्हारे द्वारा किया गया एक दुखदायी पाप कर्म तुम्हें अनेक जन्मों के लिए दुख-अशान्ति की गर्त में धकेल सकता है।

इस अति घोर धर्मग्लानि के समय जबकि चारों ओर पाप, अत्याचार, भ्रष्टाचार का साम्राज्य है, परमपिता परमात्मा स्वयं धरती पर अवतरित होकर एक अत्यंत सुखदायी दुनिया सतयुग की स्थापना कर रहे हैं और उस दुनिया में जाने के लिए श्रेष्ठ कर्म सिखा रहे हैं। तो आइये, हम भी 'जीओ और जीने दो' के प्रभु प्रिय नारे को जीवन में दृढ़ता के साथ अपनाते हुए किसी भी प्राणी को दुख न पहुँचाने का प्रण कर लें। तभी स्वर्णिम दुनिया में जाने का जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त कर सकेंगे। ❖

आत्मा है छठी इंद्रिय

ब्रह्माकुमारी कीर्ति

एक प्रसिद्ध भजन की पंक्ति है, अंखियों के झरोखे से देखूँ तुझे सांवरे..। प्रश्न उठता है कि आँखें यदि झरोखा (खिड़की या रोशनदान) हैं तो इनके द्वारा देखने वाला कौन है? झरोखा तो जड़ होता है, उनसे देखने वाला तो कोई चेतन ही होता है। आँखें भी जड़ प्रकृति की बनी हैं। इनके अपने कोई भाव भी नहीं होते। इन आँखों रूपी झरोखों से झाँकने वाले के भाव ही इन आँखों में उतरते हैं। वास्तव में आँखों से देखने वाली सत्ता है चेतन आत्मा। कई बार तो उस सत्ता के चले जाने पर ये झरोखे किसी ओर के चेहरे पर भी फिट कर दिये जाते हैं। फिर इन्हीं झरोखों से दूसरी आत्मा झांकने लगती है। गीत की पंक्ति का भाव यही है कि भगवान को याद करने वाली, उसे देखने वाली, उनसे प्यार करने वाली आत्मा है, शरीर तो माध्यम मात्र है।

जब हम मन्दिर में जाते हैं तब भी यही कहा जाता है, माथा टेको। सोचने की बात है कि शरीर के अन्य किसी अंग को टिकाने के लिए क्यों नहीं कहा जाता। चूंकि माथे में आत्मा का निवास है, आत्मा ही चेतन है, आत्मा ही का प्रभु से प्रेम है तो माथा झुकाना माना स्वयं आत्मा ने अपने को झुकाया। आत्मा ने भगवान का अभिवादन किया। किसी अन्य अंग का इतना महत्त्व हो भी कैसे, वहाँ चेतन आत्मा थोड़े ही विराजमान है। माथा टेकने का आध्यात्मिक अर्थ तो यह है कि हे आत्मा, तुम भ्रकुटि सिंहासन पर टिक जाओ। आत्मा को अपने स्वरूप की विस्मृति हो गई है, माथे में टिक कर स्वरूपस्थ होने का बोधक है यह वाक्यांश। शरीर की यूँ तो पाँच इंद्रियाँ हैं पर आत्मा को छठी इंद्रिय माना जाता है। पांच इंद्रियों को यह छठी इंद्रिय ही नियंत्रित रख सकती है इसलिए इसका स्थान शेष इंद्रियों से ऊँचा है और यह सभी इंद्रियों की राजा भी है। ❖

हनुमान जयंती पर विशेष ..

अध्यात्म की नज़र से हनुमान जी

• ब्रह्माकुमार दिनेश, हाथरस

भारत के आध्यात्मिक और पौराणिक साहित्य में अनेकानेक वीर, धीर, सशक्त, दिव्य और चमत्कारिक चरित्रों का वर्णन हुआ है। इनमें से अनेक चरित्रों की, प्रतिदिन के जीवन में मनुष्य इष्ट मानकर पूजा-अर्चना करता है, उनसे शक्ति और प्रेरणा ग्रहण करता है। उनमें से एक बहुत ही प्रसिद्ध चरित्र है श्री हनुमान जी का, जो ईश्वर-भक्ति, ईश्वर-सेवा और ईश्वर के प्रति वफादारी के साक्षात् स्वरूप हैं। भारत के अधिकतर घरों में उनकी मूर्ति प्रतिदिन पूजी जाती है और भारत के कोने-कोने में भी उनके अनगिनत मंदिर बने हुए हैं। जन-जन के दिलों में स्थान पाने वाले हनुमान जी की पूजा-अर्चना करना उनके प्रति श्रद्धा का एक पहलू है लेकिन उनके चारित्रिक गुणों से प्रेरणा लेना, उनके गुणों को जीवन में आत्मसात् करना सर्वथा दूसरा पहलू है। आइए, आज ऐसे महान चरित्र के चारित्रिक गुणों के प्रकाश से हम स्वयं को प्रकाशित करने का प्रयास करें –

मोल्ड होने की शक्ति:- दिखाते हैं कि जब वे सीता माता की खोज में निकले तो रास्ते में मुँह बाँये सुरसा मिली, बोली – बेटा, मैं बहुत भूखी हूँ, आज तू मेरा भोजन है। कहा जाता है कि शक्ति से युक्ति श्रेष्ठ है। हनुमान जी ने उस राक्षसी नारी को शक्ति से नहीं लेकिन युक्ति से वश में किया। उसने अपना बहुत सूक्ष्म रूप बनाया और उसके कपाल में से चक्कर लगाकर वापस आया और बोला – मैय्या, तुम्हारे कहे अनुसार तुम्हारा भोजन मैं बन चुका, अब मुझे आज्ञा दीजिए। यह हनुमान जी का लचीलापन है। लचीला व्यक्ति आवश्यकता प्रमाण इतना नम्र बन जाता है, छोटा बन जाता है, झुक जाता है कि परिस्थिति उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। आवश्यकता अनुसार वह अपना इतना बड़ा रूप भी धारण कर लेता है कि परिस्थिति उसके आगे छोटी पड़ जाती है। विश्व परिवर्तन के भगीरथ कार्य में ऐसी ही आत्माओं की आवश्यकता होती है।

अथक सेवा:- समुद्र लाँघकर जाते हुए हनुमान को रास्ते में मैनाक पर्वत ने भी नम्र निवेदन किया था कि थोड़ा विश्राम कर लीजिए और कंदमूल फल खा लीजिए परन्तु ईश्वरीय कार्य में तत्पर व्यक्ति को सच्चा विश्राम तो तभी मिलता है जब वह उस कार्य को

संपन्न कर लेता है। इसलिए हनुमान जी ने भी कहा – 'रामकाज किए बिना मोहे कहाँ विश्राम' और मैनाक पर्वत को धन्यवाद देते हुए उड़ चले अपनी मंज़िल की ओर। ईश्वरीय सेवा के मार्ग में अनेक प्रकार के आकर्षण, प्रलोभन और आरामपसन्दगी की बातें आती हैं लेकिन प्रभु की याद और प्रभु की सेवा – इन दो पंखों पर सवार आत्मा कहीं भी अटकती नहीं है और निरंतर उड़ती कला और उपराम स्थिति में रह ईश्वरीय कार्य में तत्पर रहती है।

हनुमान जी की उड़ान:- जब कोई व्यक्ति बहुत खुश होता है, तीव्र गति से कार्य करता है, उमंग-उत्साह में रहता है तो कहा जाता है कि यह तो जैसे उड़ रहा है। ईश्वरीय कार्य इस प्रकार की उमंग-उत्साह की उड़ान

के बिना हो नहीं सकता। ठहरती कला, सरकती कला और चलती कला वाले तो अपना काम ही नहीं बना सकते तो औरों का कल्याण क्या कर सकते हैं। समग्र विश्व का कल्याण करना है तो चाहिए उड़ती कला और उपराम स्थिति। हनुमान जी की उड़ान इसी उड़ती कला की प्रतीक है।

दृढ़ स्वमानधारी:- काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से भरपूर इस रावण राज्य में ईश्वर के दूतों को कई बार अपमानित भी होना पड़ता है लेकिन ईश्वर के सच्चे दूत ईश्वरीय वरदानों, ईश्वरीय प्रेम, ईश्वरीय शक्तियों से इतने भरपूर होते हैं कि अपमान चिकने घड़े पर डाले गए पानी की तरह फिसल जाता है। ईश्वरीय सूझ के बल से वे अपमान को भी मान में बदल लेते हैं। हनुमान जी को रावण के दरबार में जब आसन नहीं मिला तो उन्होंने पूंछ लपेटकर इतना ऊँचा आसन बना लिया जो रावण को भी उसे देखने के लिए ऊपर मुँह करना पड़ा। झुकाने वाले को खुद झुकना पड़ता है, यह शाश्वत सत्य है।

अटूट ईश्वरीय प्रेम:- जिसका भगवान से अटूट प्रेम हो जाता है उसे उस प्रेम के सिवाय कुछ नहीं सूझता, वह ऐसी ही चीज़ों को खोजता है जो उसे ईश्वरीय प्रेम की अनुभूति कराएँ। कहते हैं कि श्री सीता जी ने जब सभी को ईश्वरीय उपहार दिये तो हनुमान जी को भी कीमती मोतियों की माला दी। लेकिन हनुमान जी ने उसके एक-एक मोती को दाँत से काटकर टुकड़े-टुकड़े कर दिये। जब उसे टोका गया तो उसने कहा कि मैंने एक-एक मोती छान मारा लेकिन उसमें राम जी कहीं नहीं मिले। जिस माला में राम जी नहीं, वह मेरे किस काम की। भगवान में ऐसी दृढ़ आस्था आत्मा को मायाजीत, प्रकृतिजीत और विकारजीत बनाती है। यही एकव्रता आत्मा की निशानी है। हनुमान जी के चित्रों में उनके हृदय में भगवान का वास दिखाया गया है। हृदय भावना का स्थान है। वास्तव में, मन, बुद्धि और संस्कारों में ईश्वरीय स्मृति का रम जाना ही ईश्वर को दिल में बिठाना है। हनुमान जी ने संकल्प-संकल्प में, श्वास-श्वास में भगवान को ही याद किया इसलिए वे अव्यभिचारी याद तथा एक बल, एक भरोसे के प्रतीक हैं।

भोलापन:- भोलेनाथ को भोले बच्चे ही भाते हैं और भोले बच्चे भी कोई भी सेवा करने को हमेशा तत्पर रहते हैं जिससे भोलानाथ रीझ जाए। भोलेनाथ भगवान ऊँचे से ऊँचे परमधाम में रहते हैं जिसका रंग लाल सुनहरी है। इसकी याद में सिर के ऊँचे से ऊँचे स्थान पर बहनें सिंदूर लगाती हैं। लौकिक दुनिया के हिसाब से तो इसे सुहाग की निशानी माना जाता है लेकिन है ये परमधाम की निशानी। हनुमान जी ने जब सीताजी को यह निशानी लगाते देखा और पता पड़ा कि इससे भगवान प्रसन्न होते हैं तो उन्होंने अपने सारे शरीर को ही सिंदूर से रंग लिया अर्थात् अपनी आत्मा को परमधाम की स्मृति में रमा लिया ताकि भगवान सदा ही उस पर रीझे रहें।

चतुर सुजान:- भोलेपन का अर्थ बुद्धु होना कदापि नहीं है। भगवान की सेवा में तत्पर हनुमान जी से जब ईर्ष्यावश सभी सेवायें छुड़ा ली गईं तो भी वह चतुरसुजान सेवक न तो नाराज़ हुआ और न ही ज़िद्द या हठ पर उतरा लेकिन अपने बौद्धिक चातुर्य से उसने पुन: भगवान का संग प्राप्त कर लिया। हनुमान जी को तो बस भगवान का संग चाहिए था। सेवा चाहे जैसी भी हो लेकिन उद्देश्य है भगवान का साथ। उन्होंने अपने लिए एक बहुत छोटी सेवा यानि कि चुटकी बजाने की सेवा की याचना की और उसके ज़रिए उन्हें भगवान का साथ भी मिलता रहा। सत्य है कि जिस सेवा को करते हुए ईश्वरीय

साथ और स्मृति रहे, वही बड़ी है। जिस सेवा को करते ईश्वरीय साथ और स्मृति भूल जाए, वह बड़ी होते भी छोटी है।

संकटमोचनः- हनुमान जी को संकटमोचन और भूत-प्रेतों को भगाने वाला कहा जाता है। पाँच विकार ही सबसे बड़े भूत हैं जिन्होंने सारी सृष्टि को दुख में जकड़ रखा है। जब ये पाँच विकार (काम, क्रोध, ..) जीवन से भाग जाते हैं तो अन्य भूत-प्रेत भी नज़दीक नहीं फटक सकते। हनुमान जी के अपने जीवन में इन पाँच विकारों या इनके अंश का कोई स्थान नहीं था। जो स्वयं भूतों (विकारों) से मुक्त हो, वही औरों के भूतों को भी भगा सकता है।

हनुमान जी की नम्रताः- कहा जाता है कि एक बार भगवान जी ने अपने प्रिय भक्त हनुमान को कोई पद देना चाहा। हनुमान जी ने नम्रतापूर्वक कहा कि मुझे किसी भी पद की आवश्यकता नहीं है, मैं तो आपके चरणों में ही रहना चाहता हूँ। भगवान ने बहुत आग्रह किया तो बोले, ठीक है, फिर मुझे एक नहीं, दो पद चाहिएँ। दरबारी खुसर-पुसर करने लगे तो प्रभु के चरणों में झुककर बोले – ये दोनों पद। सच्चे सेवक को किसी पद या मान-शान की इच्छा नहीं होती। वह तो नीचे से नीचे स्थान पर बैठकर भी ऊँची से ऊँची सेवा कर सकता है। हनुमान जी इसी समर्पणमयता के प्रतीक हैं।

संजीवनी बूटीः- लक्ष्मण का अर्थ है, अपने लक्ष्य पर मन को टिकाने वाला। लक्ष्मण के मूर्छित होने का अर्थ है, लक्ष्य से मन का भटक जाना। आध्यात्मिक पुरुषार्थ में जब किसी महारथी का मन लक्ष्य से भटक जाता है तो उसे पुनः सुरजीत करने के लिए ज्ञान रूपी संजीवनी बूटी की आवश्यकता पड़ती है। हनुमान जी ने ज्ञान रूपी संजीवनी बूटी देकर उस लक्ष्यविमुख आत्मा को पुनः लक्ष्योन्मुख कर दिया। यही संजीवनी बूटी का आध्यात्मिक रहस्य है। पहाड़ उठाना अर्थात् दुर्गम कामों को सहजता से कर देना। मायावी दुनिया में, माया से बेहोश आत्मा को सुरजीत करने के लिए कई बार पहाड़ उठाने जैसी परिस्थितियाँ भी पार करनी पड़ती हैं। हनुमान जी ने यह कर दिखाया।

हाथ में लॉ नहीं उठाना

यदि कोई कुछ उलटा बोलता है, अपमान या निन्दा करता है और हम भी शान्त न रहकर बदले का व्यवहार करते हैं तो दोनों ही विकर्म के अधिकारी बन जाते हैं। बदला लेना ही हाथ में लॉ उठाना है। किसी ने दो गाली दी और हमने चार सुना दी तो दूसरे ने तो एक पापकर्म किया पर हमने दुगुना कर दिया। धर्मराज तो पुण्य के खाते को देखकर स्वर्ग में जाने की टिकट देता है। नर्क में जाने के लिए तो कुछ भी पुरुषार्थ करने की ज़रूरत नहीं, वहाँ तो अपने आप ही पहुँच जाते हैं। वर्तमान कलियुगी नर्क में सब अपने आप आ गए लेकिन सतयुगी स्वर्ग में अपने आप नहीं जा सकते। उसके लिए ईश्वरीय पढ़ाई पढ़नी होगी जो वर्तमान समय परमात्मा शिव द्वारा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की 8,500 से भी अधिक शाखाओं के माध्यम से संसार के 137 देशों में पढ़ाई जा रही है।

शिव परमात्मा कहते हैं, बदला न लो, बदलकर दिखाओ। यदि कोई गुस्सा करे तो बदले में गुस्सा न करो बल्कि पूरा शान्त रहो। शान्ति के प्रभाव से क्रोधी का क्रोध धीरे-धीरे शान्त हो जायेगा, इससे हमारा पुण्य का खाता बढ़ जायेगा। डॉक्टर तो फीस लेकर केवल बाहर की बीमारी बताता है मगर निंदक मित्र तो बिना फीस लिए ही अंदर की बीमारी भी बता देता है। इसलिए निंदक के प्रति क्रोध नहीं, कृतज्ञता भाव रखो।

– **खुशीराम साहनी, शान्तिवन**

जीवन हीरे तुल्य बन गया

• ब्रह्माकुमार धर्मवीर, चरखी दादरी

मेरे पिताजी ज़मींदार थे। घर में धन की कमी नहीं थी। मुझे बचपन से ही बीड़ी-हुक्का पीने की लत लग गई। धीरे-धीरे मैं सुलफ़ा और भांग पीने लग गया, साथ-साथ शराब का भी सेवन करने लगा। नशों के बावजूद भी मैं साधु-संतों की बहुत सेवा करता था और भगवा कपड़े पहनने वालों को भगवान की तरह से मानता था क्योंकि समाज में कहते हैं कि भगवान से मिलने का रास्ता यही लोग बता सकते हैं।

बुद्धि हो गई राक्षसी

एक दिन ऐसा आया कि घरवाले मेरी शराबखोरी से तंग आ गए और बड़े भाई ने मेरे को अलग कर दिया। अलग होने के बाद मैं खेती करने लगा तथा दिन-रात खेत में ही दोस्तों के साथ शराब, भांग, गांजा आदि नशीले पदार्थों का सेवन करने लगा। परिवार वालों का जीवन नारकीय हो गया। उनके कहने का मेरे पर कोई असर नहीं होता था क्योंकि नशीले पदार्थों के सेवन से बुद्धि राक्षसी हो गई थी। घर वाले जब मुझे नशा करने से रोकते तो उन्हें कहता था कि नशा तो शंकर भगवान भी करते थे, भैरु शराब पीता था इसलिए इन्हें मैं नहीं छोड़ सकता क्योंकि मुझे शंकर भगवान से मिलना है। मेरे शरीर छोड़ने पर शराब उडेल देना लेकिन छोड़ूँगा नहीं।

भगवान से मिलने की लगन

मुझमें भगवान से मिलने की तीव्र लगन थी। मंत्र भी जपता रहता था और घरवालों को कहता था कि किसी न किसी दिन गोप-गोपियों संग खेलूँगा। भगवान स्वयं मेरे खेत की रखवाली करेगा तो यह सुन उनको बहुत गुस्सा आता था क्योंकि वे तो मेरे कारनामों को रोज़ देखते थे। गाँव वालों को भी यही कहता था कि मुझे भगवान से मिलना है। वे भी हँसते थे कि देखो कैसा इंसान है, इतना नशा करता है और भगवान से मिलने की बातें करता है। मैं शरीर से बिल्कुल दुबला-पतला हो चुका था। गाँव वाले कहते थे कि अब यह पागल हो गया है, कुछ दिन में शरीर छोड़ देगा।

आखिर वह दिन आ ही गया जो मैं उन नशीले पदार्थों के सेवन से छूट गया। कारण यह हुआ कि हमारे गाँव का एक भाई ब्रह्माकुमारीज़ आश्रम में जाता था, वह मेरे नज़ारे रोज़ देखता था। उसने आश्रम में बहनों को बताया कि हमारे गाँव में एक भाई ऐसे कहता है कि भगवान से मिलूँगा, तो बहनों ने कहा कि भाई को कहना कि आश्रम में चलो, बहनें आपको बुला रही हैं।

भगवान से मिलने की अनुभूति

कुछ दिन बाद मैं सेवाकेन्द्र पर पहुँचा। एक भाई ने मुझे प्रदर्शनी समझाई। प्रदर्शनी समझने के बाद लगा कि जो कुछ है, यही है। अगले दिन से बहनों ने मेरा साप्ताहिक कोर्स शुरू किया। आश्रम के अंदर जाते ही मुझे अपनापन महसूस होने लगा व लगा कि मेरा असली परिवार यही है। बहनों ने मुझे बहुत रूहानी स्नेह दिया। घर में, बचपन में बहुत प्यार मिला लेकिन आश्रम में जितना मिला वह कहीं बेहतर था। मैंने अगले दिन से प्रात: पाँच बजे की क्लास भी शुरू कर दी। साथ-साथ कोर्स भी किया। इस दौरान ही मुझे भगवान के मिलने की अनुभूति हुई। **बाबा ने मुझे ऐसा आकर्षित किया जो मुझे हमेशा लगता है कि कोई शक्ति मुझे ऊपर की ओर खींच रही है। नियमित**

क्लास करने से मुझे नशीले पदार्थों से नफरत होने लगी। दिल कहने लगा, मेरा यह भोजन नहीं है, यह तो दुष्कर्म है। मैंने तीन दिन की योग भट्ठी में सभी नशीले पदार्थ बाबा को दे दिये। अब मैं धूम्रपान करने वालों के पास बैठ भी नहीं सकता। बाबा ने मुझे इतना दे दिया कि अब और कुछ बाकी ही नहीं रहा। मुझे भगवान मिल गया, श्रेष्ठ आत्माओं का संग मिल गया, इतना श्रेष्ठ ईश्वरीय परिवार मिल गया, अब और कोई इच्छा नहीं। बाबा का कितना शुक्रिया करूँ, गुण गाऊँ!

यह बिल्कुल सत्य है कि भगवान इस धरा पर आया हुआ है। केवल बाबा ही असली है, बाकी सब नकली हैं, विनाशी हैं। अगर किसी को भगवान से मिलना है तो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से संपर्क करे। अब मैं नियमित क्लास (ईश्वरीय महावाक्य व योगाभ्यास) करता हूँ। अब मेरा परिवार, रिश्तेदार तथा सभी गाँव वाले मुझसे प्रभावित हैं तथा सभी से मेरे संबंध मधुर हैं। वास्तव में, जीवन हीरे-तुल्य बन गया। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर ही ऐसी पढ़ाई पढ़ाई जाती है जिससे मनुष्य जितना महान बनना चाहे, बन सकता है क्योंकि यह ज्ञान स्वयं परमपिता परमात्मा का दिया हुआ है, किसी मनुष्य का नहीं। ❖

रूहानी नेत्र सर्जन

शिव बिनायक अवस्थी, बाराचकिया (बिहार)

मैं जनवरी, 2008 में माउंट आबू आया था। वहाँ प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के दिव्य, स्वर्गीय वातावरण से प्रभावित होकर मैंने शिव बाबा का बच्चा बनकर पवित्रता को धारण करने का दृढ़ संकल्प किया। शिव बाबा की असीम कृपा से तब से आज तक ज्ञान मार्ग पर चल रहा हूँ।

यूँ तो मोतियाबिन्द पक जाने के कारण मेरी आँखों में धुंधलेपन की तकलीफ थी पर जुलाई, 2010 में अहसास हुआ कि यह तकलीफ ज्यादा हो गई है। एक दिन प्रात: अमृतवेले शिवबाबा की प्रेरणा प्राप्त हुई कि बच्चे शीघ्र ऑपरेशन कराओ। नेत्र जाँच केन्द्र में जाँच हेतु गया तो डॉक्टर जी ने बतलाया कि मेरी दाहिनी आँख की भीतरी दोनों पुतलियाँ, बीच के लेयर से चिपकी हुई हैं फलत: ऑपरेशन काफी जोखिमपूर्ण है, हो सकता है, दाहिनी आँख की रोशनी चली जाये। यह सुन मैं और मेरे परिवारजन काफी भयभीत हो गये।

फिर भी ऑपरेशन की तिथि निश्चित हो ही गई। ऑपरेशन थियेटर में जाने के पूर्व मैंने तहेदिल से शिवबाबा को याद किया और कहा, बाबा, आप रूहानी सर्जन बनकर मेरी आँख की रक्षा करना। अप्रत्याशित कमाल यह हुआ कि ऑपरेशन के दौरान मुझे अनुभव हुआ – साक्षात् शिवबाबा अपनी रूहानी एवं दिव्य किरणों से मेरी आँख का ऑपरेशन कर रहे हैं। लगभग सवा घंटे तक ऑपरेशन चला। अंतत: डॉक्टरों ने कहा, बाबू जी, आपका ऑपरेशन पूर्णत: सफल रहा। जो जोखिम थी, उससे किसी अभूतपूर्व शक्ति ने आपकी रक्षा की। फिर कहा, बाबू जी, क्या आप आध्यात्मिक व्यक्ति हैं? मैंने सगर्व कहा, मैं शिवबाबा का बच्चा हूँ, बाबा ने ही मेरी रक्षा की और मुझे जोखिम से उबारा है। मेरे इस अनुभव का सार यही है – जीवन में कोई भी विघ्न-बाधा आने पर शिवबाबा को तहेदिल से याद करने पर मानव विघ्नजीत बन सकता है। ❖

ग्लोबल हॉस्पिटल की सेवायें

बीस वर्ष पहले सन् 1991 में जब ग्लोबल हॉस्पिटल का फाउन्डेशन स्टोन लगाया गया था, तब अव्यक्त बापदादा ने निम्नलिखित आशीर्वचन उच्चारे थे –

'यह भी अनेक आत्माओं के अनेक जन्मों के जीवन को श्रेष्ठ बनाने का फाउन्डेशन हो जाएगा। निमित्त यह पत्थर का फाउन्डेशन लगाते हैं लेकिन अनेक आत्मायें दुआओं के भण्डार से भरपूर हो आपको दुआयें देती रहेंगी।'

आज 20 वर्ष बाद जब हम हॉस्पिटल द्वारा किया गया कार्य तथा उसका विस्तार देखते हैं, तो लगता है सचमुच जानी जाननहार बाबा के महावाक्य सार्थक हुए पड़े हैं। ग्लोबल हॉस्पिटल के उद्देश्य भी स्वयं बापदादा ने ही निर्धारित किये हैं, जोकि प्रत्यक्ष हासिल होते हुए दिखाई दे रहे हैं, उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1) ब्राह्मण भाई-बहनों के शरीरों को निरोगी बनाए आत्मा को शक्तिशाली बनाने में सहयोग करना।
2) माउण्ट आबू तथा आस-पास की जनता की स्वास्थ्य सेवा कर आबू निवासियों की वृत्ति चेन्ज करने के निमित्त बनना।
3) समाज सेवा के माध्यम से देश-विदेश की नामीग्रामी आत्माओं को आकर्षित कर ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनाना।

इन्हीं उद्देश्यों को लेकर 20 बेड से शुरू हुआ यह प्रकल्प आज पाँच शाखाओं में विस्तारित हो चुका है।

- जी वी मोदी रूरल हेल्थ केयर सेंटर, तलहटी, आबूरोड
- ग्लोबल अस्पताल नेत्र संस्थान तलहटी, आबूरोड
- राधा मोहन मेहरोत्रा ग्लोबल अस्पताल ट्रोमा सेंटर तलहटी, आबूरोड
- बी.एस.ई.एस. एम.जी. अस्पताल, मुंबई
- ब्रिगेडियर वोरा क्लीनिक एवं ज्योतिबिंदु डायग्नोस्टिक सेंटर, बड़ौदा, गुजरात

हॉस्पिटल में सेवारत बच्चों को 25 मार्च, 1995 को सम्बोधित करते हुए बापदादा ने कहा था –

'मधुबन की, माउण्ट आबू की हॉस्पिटल सबके लिये और आस-पास वालों के लिये भी एक सहारा अनुभव होगी।'

पिछले केवल तीन वर्षों में हॉस्पिटल द्वारा की गयी सेवायें

ग्लोबल हॉस्पिटल मा.आबू में बाह्यरोगी विभागों में आने वाले मरीजों की संख्या 2,80,457 तथा भर्ती मरीजों की संख्या 9921 रही। भर्ती मरीजों में नि:शुल्क सेवा लेने वालों की संख्या 6361 रही। उपरोक्त आंकड़े दर्शाते हैं कि ग्लोबल हॉस्पिटल में करीब 60 से भी ज्यादा मरीजों का नि:शुल्क इलाज किया जाता है।

ग्लोबल अस्पताल का कार्यक्षेत्र

सिरोही जिले में स्थित अरावली की पहाड़ियों की सबसे ऊँची चोटी पर बसे माउंट आबू में ग्लोबल अस्पताल स्थित है। इसका कार्यक्षेत्र सिरोही जिले के अलावा जालोर, पाली तथा गुजरात के बनासकाठा जिले तक फैला हुआ है। लोक स्वास्थ्य की उन्नति को ध्यान में रखकर हमने मुख्य पाँच प्रोजेक्ट्स शुरू किये हैं, जो इस प्रकार हैं –

विलेज आउट रिच प्रोजेक्ट

डॉ. विनय लक्ष्मी की अध्यक्षता में चल रहे इस प्रोजेक्ट के अन्तर्गत ग्लोबल अस्पताल ने 12 आदिवासी गाँव गोद लिये हैं। इसमें स्वास्थ्य सेवाओं के अलावा बच्चों के लिये न्युट्रीशनल प्रोजेक्ट, ट्युबरक्युलोसिस ट्रीटमेन्ट प्रोजेक्ट तथा ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिये सिलाई प्रशिक्षण प्रोजेक्ट शामिल है।

ग्लोबल अस्पताल अन्धता निवारण कार्यक्रम

ग्लोबल अस्पताल सन् 1997 से राष्ट्रीय अन्धता निवारण कार्यक्रम में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। इसमें आज तक करीब 20,000 नि:शुल्क मोतियाबिन्द

ऑपरेशन्स हो चुके हैं। ऑर्बिस सपोर्टेड प्रोजेक्ट नयनराज के अंतर्गत कुल 1,34,271 ग्रामीण स्कूली बच्चों का नेत्र परीक्षण कर दृष्टिदोष वाले बच्चों को नि:शुल्क चश्मा वितरित किया गया तथा 440 बच्चों के सफल नेत्र ऑपरेशन किये गये जिनमें जन्मजात मोतियाबिन्द तथा भेंगेपन के ऑपरेशन शामिल हैं। दूरदराज के गाँवों में नेत्रसेवा पहुँचाने के उद्देश्य से सिरोही तथा जालोर जिले में विजन सेन्टर आरंभ किये गये।

कम्युनिटी सर्विस प्रोजेक्ट

सन् 2004 से शुरू हुआ ग्लोबल अस्पताल का यह प्रोजेक्ट भील, गरासीया तथा रबारी जाती के वनवासियों के लिये वरदान साबित हो रहा है। इसके अंतर्गत गोद लिये गए 89 गाँव ऐसे दूरगामी पहाड़ी गाँव हैं जहाँ स्वास्थ्य सुविधा के नाम पर केवल नीम, हकीम और भोपों का ही प्रभाव है। चलते-फिरते दवाखाने द्वारा जिसमें प्रशिक्षित डॉक्टर तथा फार्मासिस्ट कम नर्सिंग असिस्टेन्ट होता है, प्रतिवर्ष औसतन 40,000 मरीजों का नि:शुल्क इलाज किया जाता है जिसमें नि:शुल्क दवाइयाँ भी शामिल हैं।

अब तक पाँच चलते-फिरते दवाखाने कार्यरत थे किन्तु निधि के अभाव में फिलहाल केवल दो दवाखाने ही कार्यरत हैं।

स्कूल हेल्थ एण्ड न्यूट्रीशन स्पोर्ट प्रोजेक्ट

इस प्रोजेक्ट के अन्तर्गत माउण्ट आबू और आबू रोड के 22 चयनित स्कूल्स के 2500 बच्चों को लाभ मिल रहा है। बच्चों को मुहैया की जाने वाली स्वास्थ्य सुविधाओं में टीकाकरण, नियमित हेल्थ चेकअप, एनीमिया और टीबी जाँच, नि:शुल्क दवाई वितरण तथा पोषाहार शामिल है। इसके साथ-साथ बच्चों को शैक्षणिक सुविधाएँ जैसे, किताबें, शाला पोशाक, कंप्यूटर आदि मुहैया कराये गये हैं। जिन आठ स्कूलों में शिक्षकों की कमी थी, वहाँ हॉस्पिटल की तरफ से शिक्षकों की नियुक्ति की गयी। जिन स्कूलों में बच्चे पेड़ के नीचे पढ़ते थे वहाँ अतिरिक्त कमरों का निर्माण किया गया, रंग-रोगन व सफेदी की गयी, फर्नीचर (बेंच ,टेबल, श्यामपट) की आपूर्ति की गयी। शौचालय व मूत्रालय का निर्माण किया गया तथा ग्यारह स्कूलों में हैन्ड पम्प लगा कर पीने के पानी की व्यवस्था की गयी। इस प्रोजेक्ट के अंतर्गत कुल 1550 स्कूली छात्र तथा 400 आँगनवाड़ी के बालक-बालिकाओं को रोजाना पोषाहार दिया जाता है। इसमें फल, चने, बिस्किट शामिल हैं।

इस सेवा के परिणामस्वरूप हर स्कूल में छात्रों की उपस्थिति बढ़ी। मा.आबू में प्रोजेक्ट की शुरूआत में छात्रों की उपस्थिति 550 थी जो अब बढ़कर 750 हो गई है। प्रोजेक्ट की शुरूआत में 20 बच्चे एनीमिया के शिकार थे, अब लगभग सभी बच्चों का हीमोग्लोबिन सामान्य हो गया है। बच्चों में टी.बी. की बीमारी का समय पर पता चलने के कारण होने वाली स्वास्थ्य हानि को रोका जा सका।

स्माईल ट्रेन प्रोजेक्ट

इस प्रोजेक्ट के अन्तर्गत जन्मजात कटे होंठ और कटे तालू की नि:शुल्क प्लास्टिक सर्जरी की जाती है। ग्लोबल अस्पताल में औसतन 500 सर्जरीज प्रति वर्ष की जाती हैं।

घुटने एवं कूल्हे के जोड़ प्रत्यारोपण ऑपरेशन सुविधा

इस सुविधा का लाभ भारत के ही नहीं बल्कि विदेश के मरीज भी ले रहे हैं।

आपदा राहत सेवा

चाहे कच्छ-भुज का भूकम्प हो या सूरत, बिहार और कर्नाटक में आई बाढ़ हो, ग्लोबल अस्पताल ने हमेशा सक्रिय भूमिका निभाई है।

इस प्रकार बाबा का यह अस्पताल दीन-दुखियों के दर्द को मिटाने में और दयालु कृपालु बाबा के रहमदिल स्वरूप को सार्थक करते हुए आत्माओं को अंचली देने का कार्य कर रहा है।

आप भी समाज सेवा के इस पुनीत कार्य में अपना योगदान दे सकते हैं। आपके द्वारा दिया गया सहयोग समाज की ऐसी आत्माओं तक पहुँचाया जाएगा जिनका सहारा केवल एक परमात्मा ही है । ❖

आवश्यक सूचना
(सदस्यता शुल्क से संबंधित)

1. आपको ज्ञात ही होगा कि जुलाई मास से **'ज्ञानामृत'** एवं 'The World Renewal' का नया वर्ष आरंभ हो रहा है। इस नये वर्ष 2011-12 से पत्रिकाओं का भारत में वार्षिक शुल्क 80 रुपये एवं आजीवन 2,000 रुपये रहेगा। विदेशों के पोस्टिंग चार्ज बढ़ने के कारण नये वर्ष से विदेशों का वार्षिक शुल्क 800 रुपये एवं आजीवन 8,000 रुपये रहेगा।
2. शुल्क राशि भेजते समय किसी के भी पर्सनल नाम पर नहीं भेजें, केवल **'ज्ञानामृत'** या '**The World Renewal**' के नाम पर ड्राफ्ट, मनीऑर्डर या डाकघर द्वारा EMO से भेजें। शान्तिवन डाकघर में ई.मनीऑर्डर (EMO) सुविधा उपलब्ध है जिस द्वारा उसी दिन 10 मिनट के अंदर भारत के किसी भी कोने से पत्रिकाओं की राशि शान्तिवन डाकघर में पहुँच जाती है जिसका पिन कोड नं. 307510 है। EMO के लिए मनीऑर्डर की तरह ही अपना पूरा पता तथा पिन कोड नं. अवश्य देना होता है। साथ में फोन नंबर ज़रूर लिखें।
3. आपको ज्ञात होगा कि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) की ब्रांच शान्तिवन में है, अत: कोई भी ड्राफ्ट शान्तिवन, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) के नाम से ही भेजें।
4. ड्राफ्ट के ऊपर केवल **'ज्ञानामृत, शान्तिवन'** या '**The World Renewal, Shantivan**' ही लिखें। किसी व्यक्ति या शहर का नाम न लिखें।
5. अभी आप ऑनलाइन भुगतान सुविधा द्वारा भी ज्ञानामृत के सदस्य बन सकते हैं। बैंक एकाउंट का विवरण निम्नलिखित है –

    बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
    बैंक ब्रांच का नाम : शान्तिवन
    सेविंग बैंक एकाउंट नंबर : 30297656367
    IFS Code: SBIN0010638
    E-mail: hindigyanamrit@gmail.com
6. नये डायरेक्ट पोस्ट करने वाले पते कृपया टाइप करके या बड़े अक्षरों में साफ-साफ भेजें।

संपर्क के लिए

ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान।
फोन : 02974-228125, फैक्स : 02974-228116
मोबाइल : 09414006904, 09414423949
E-mail: omshantipress@bkivv.org

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 atamprakash@bkivv.org